लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय

हिंदी त्रैमासिक ई-पत्रिका

सातवां संस्करण

हिंदी पखवाड़ा समारोह विशेषांक



कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा(पूर्व), मुंबई - 400 051

फैक्स-02226573814 **ई-मेल** pdcamumbai@cag.gov.in

लेखापरीक्षा ज्ञानोदय परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सी एम साने

महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा

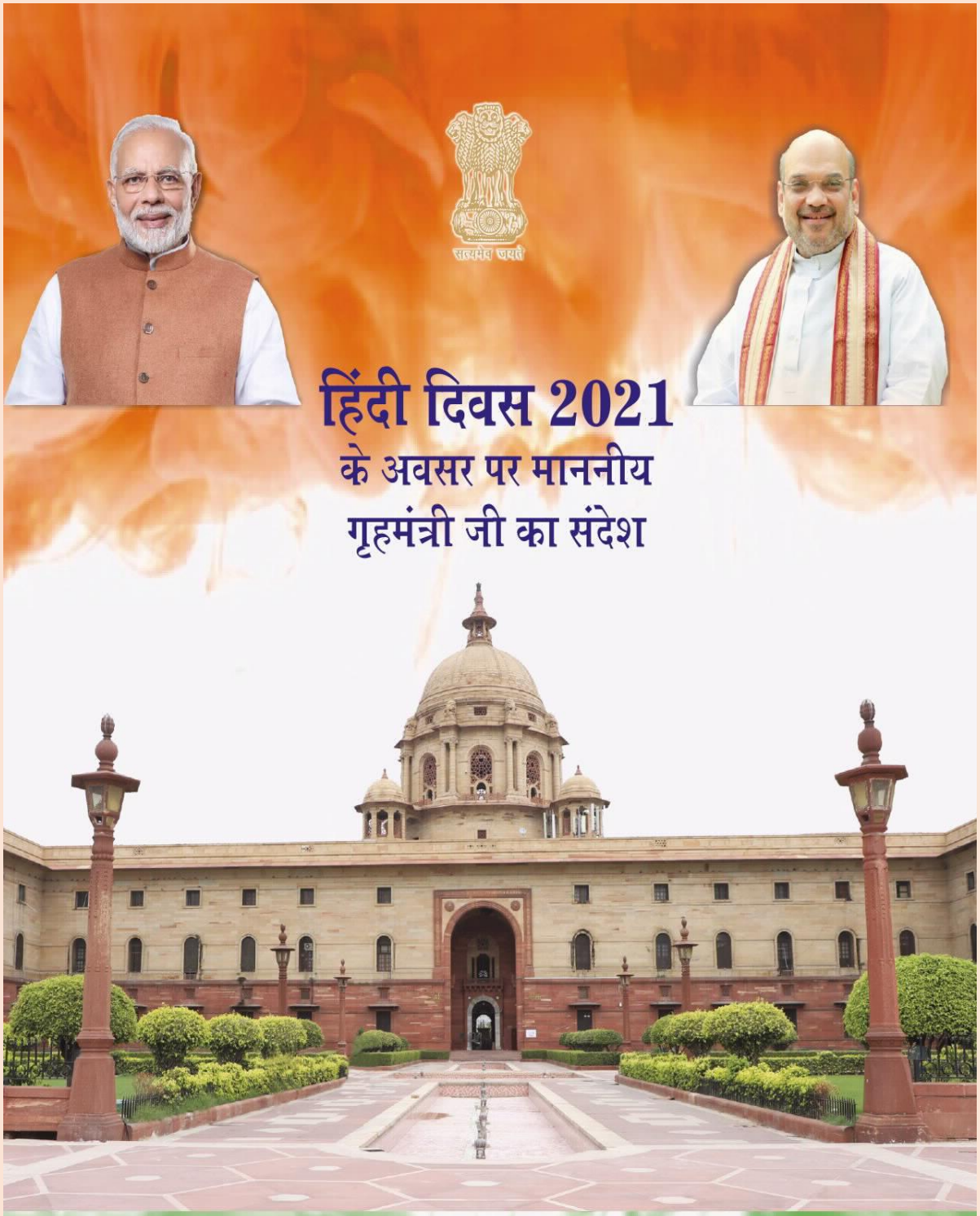
संरक्षक

श्री अविनाश जाधव - उपनिदेशक

संपादक-मंडल

श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती मीना देशप्रभु	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती विद्या मुरलीधरन	**वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी**
श्रीमती कल्पना असगेकर	**पर्यवेक्षक**
श्री आनंद कुमार सिंह	**कनिष्ठ अनुवादक**

(रचनाओं की मौलिकता एवं विचार से संबंधित पूर्ण उत्तरदायित्व रचनाकारों का है- संपादक-मंडल)



हिंदी दिवस 2021

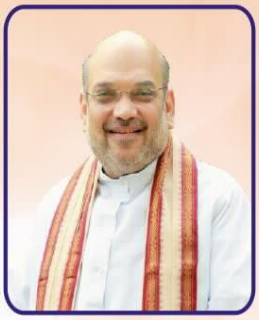
के अवसर पर माननीय गृहमंत्री जी का संदेश

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह और सहकारिता मंत्री
भारत सरकार
AMIT SHAH
HOME AND COOPERATION MINISTER
GOVERNMENT OF INDIA

सत्यमेव जयते



प्यारे देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं ।

भाषा मनोभाव व्यक्त करने का सबसे सशक्त माध्यम है। किसी भी देश का समग्र विकास तभी संभव है जब उसके निवासी अपनी मातृभाषा में चिंतन एवं लेखन करें। मातृभाषा ही ज्ञान और अभिव्यक्ति का सबसे अच्छा माध्यम है। भारत जैसे सांस्कृतिक रूप से समृद्ध देश के प्राचीन ज्ञान में ही आज के युग के अनेक जटिल प्रश्नों के उत्तर छुपे हैं और 21वीं सदी के भारत के विकास में इस ज्ञान का एक महत्वपूर्ण स्थान है। इस ज्ञान का उचित दोहन मातृभाषा के विकास के बिना संभव नहीं है। मातृभाषा में वह क्षमता है जो ज्ञान, गौरव और स्वाभिमान भी प्रदान करती है।

आधुनिक हिंदी साहित्य के पितामह कहे जाने वाले भारतेंदु हरिश्चंद्र जी ने कहा है:

"मातृभाषा की उन्नति के बिना किसी भी समाज की तरक्की संभव नहीं है तथा अपनी भाषा के ज्ञान के बिना मन की पीड़ा को दूर करना असंभव है।"

हिंदी का उद्भव एवं विकास भारत की क्षेत्रीय भाषाओं के साथ हुआ है। मूलत: इन सभी भाषाओं में भारतीय संस्कृति की मिट्टी की खुशबू आती है। यह आवश्यक है कि क्षेत्रीय भाषाओं का संरक्षण, संवर्धन और विकास किया जाए तथा अनुवाद के माध्यम से इनके बीच एक सेतु बनाया जाए ताकि भारतीय साहित्य समृद्ध हो सके। इससे भारतीय भाषाओं में आपसी सामंजस्य, सहिष्णुता, सम्मान और सौहार्द भी बढ़ेगा तथा हमें एक-दूसरे का साहित्य पढ़ने का अवसर भी मिलेगा एवं देश की भाषाई एवं राष्ट्रीय एकता और मजबूत होगी। देश की सभी भाषाओं की आपसी सहभागिता, उनका स्वतंत्र विकास और संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग देश में शान्ति, परस्पर सद्भावना एवं प्रगति का मुख्य आधार बन सकता है। तिरुवल्लूवर और सुब्रमण्यम भारती जैसे तमिल के महान कवियों की साहित्यिक रचनाएं कालजयी हैं, जिन पर सभी देशवासियो को गौरव है।

इसी प्रकार बांग्ला के रवींद्रनाथ टैगोर हों, शरतचंद्र हों या महाश्वेता देवी अथवा पंजाब की अमृता प्रीतम, हम इनका साहित्य भी उसी प्रकार हिंदी में पढ़ते हैं, जिस प्रकार हम हिंदी के प्रेमचंद का साहित्य पढ़ते हैं। वास्तव में, हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाएं हमें विरासत में मिली हैं तथा इस धरोहर की रक्षा एवं संवर्धन करना हमारा महत्वपूर्ण दायित्व भी है और वर्तमान सरकार इसी दिशा में प्रतिबद्ध है। दशकों के बाद देश के माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में एक 'नई शिक्षा नीति' हमें मिली है, जिसका उद्देश्य मातृभाषा में शिक्षा उपलब्ध कराना तथा सभी भारतीय भाषाओं को पल्लवित और पुष्पित करना है।

विभिन्न भाषाएं और संस्कृतियां भारत की पहचान हैं, सभी भाषाओं का समृद्ध इतिहास है, समृद्ध साहित्य है और बड़ी संख्या में बोलने वाले भी मौजूद हैं किंतु पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में पिरोने का काम हिंदी ने बखूबी किया है। देश की आजादी की लड़ाई में पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता सेनानियों को एक करने का काम उस जमाने में हिंदी भाषा ने किया था। इस कार्य में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण थी, उन्होंने कहा था,

"जो भाषा भारत के दिलों पर राज करती है, वह भाषा हिंदी है।"

भाइयों, बहनों ! वैज्ञानिकों ने माना है कि हिंदी एक वैज्ञानिक भाषा है, हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना अत्यंत सरल है। हिंदी में जैसा बोला जाता है, वैसे ही लिखा जाता है और हिंदी की इन्हीं विशेषताओं और लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान सभा ने गंभीर विचार-विमर्श के बाद आपसी सहमति से हिंदी को भारत संघ की राजभाषा का दर्जा दिया तथा हिंदी संबंधित संवैधानिक प्रावधानों को आज के ही दिन यानि 14 सितंबर 1949 को अंगीकार किया। इसी उपलक्ष में हम प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाते हैं।

प्यारे देशवासियो! जैसा कि आप जानते हैं कोरोना के कारण भारत ही नहीं अपितु पूरी दुनिया में गंभीर संकट आ गया और सभी देशों ने इस समस्या से निदान पाने के लिए हर संभव प्रयास किए। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारत में कोरोना की लड़ाई अत्यंत सफलतापूर्वक लड़ी गई। इस लड़ाई में सभी राज्य सरकारों और भारत की 130 करोड़ की जनता ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया।

श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में इस लड़ाई से लड़ने में हमें अनेक विकसित देशों से बेहतर सफलता मिली और यदि जनसंख्या के अनुपात से देखें तो हम पूरी दुनिया में सबसे कम मृत्यु दर के साथ महामारी से हुई हानि को कम रखने में सफल हुए हैं। इस लड़ाई में माननीय प्रधानमंत्री जी ने देश की जनता के हौसले को बढ़ाने के लिए समय-समय पर जनता की भाषा में ही राष्ट्र को संबोधित किया ताकि देश के अधिक से अधिक लोगों तक प्रभावी ढंग से बात पहुंच सके।

कोरोना काल की विषम परिस्थितियों में राजभाषा संबंधी संवैधानिक दायित्वों के निर्वहन में राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित किया। माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत और स्वदेशी के आह्वान से प्रेरित होकर राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय ने स्मृति आधारित कंप्यूटर सॉफ्टवेयर स्वदेशी टूल 'कंठस्थ' को अधिक लोकप्रिय बनाया। विभिन्न सरकारी संगठनों के हिंदी अधिकारियों को ई-प्रशिक्षण देकर प्रोत्साहित भी किया है। इसी प्रकार स्वयं हिंदी भाषा सीखने के लिए बनाए गए 'लीला हिंदी ऐप',- *लर्निंग इंडियन लैंग्वेजेज थ्रू आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस* का भी प्रचार किया जा रहा है। इस ऐप के माध्यम से अंग्रेजी के अलावा 14 अन्य भारतीय भाषाओं, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, बांग्ला, असमिया, मणिपुरी, मराठी, उड़िया, पंजाबी, नेपाली, कश्मीरी, गुजराती एवं बोडो से स्वयं हिंदी सीखी जा सकती है।

कोरोना महामारी में भी राजभाषा संबंधी कर्तव्यों को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों/ विभागों/ उपक्रमों आदि के द्वारा प्रकाशित की जाने वाली गृह पत्रिकाओं के लिए ई-पत्रिका पुस्तकालय प्लेटफार्म उपलब्ध कराया, जिसके माध्यम से देश-विदेश में कहीं भी बैठकर केंद्र सरकार के संस्थानों की गृह-पत्रिकाओं को पढ़कर उसका लाभ उठाया जा सकता है। वर्तमान में राजभाषा विभाग ने इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों से बैठकें एवं निरीक्षण कर राजभाषा संवर्धन में एक नई पहल की है। ई-महाशब्दकोश मोबाइल ऐप' तथा 'ई-सरल हिंदी वाक्यकोश मोबाइल ऐप' भी उपलब्ध कराए हैं, इनके प्रयोग से अधिकारियों को हिंदी में टिप्पणी लिखने में बहुत सुविधा हो रही है।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय की सुविचारित नीति है कि केंद्र सरकार के कार्यालयों में हिंदी का प्रयोग प्रेरणा, प्रोत्साहन व सद्भावना से बढ़ाया जाए। माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान संबंधी प्रेम और प्रयोग से प्रभावित होकर राजभाषा विभाग ने हिंदी के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए बारह 'प्र' की रूपरेखा और रणनीति पर काम करना शुरू किया है, जिसमें महत्वपूर्ण स्तंभ हैं: प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, पुरस्कार, प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास। राजभाषा विभाग द्वारा विभिन्न बैठकों में संबंधित कार्यालय के शीर्ष नेतृत्व को इन्हीं बारह 'प्र' की रणनीति के अनुसार कार्यालय के अधिक से अधिक कार्य को मूल रूप से सरल एवं सहज हिंदी में करने के लिए प्रेरित किया जाता है।

हम सभी जानते हैं कि भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी स्वयं हिंदी और भारतीय भाषाओं के प्रति अनुराग रखते हैं। माननीय प्रधानमंत्री जी द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में दिए गए ओजस्वी संबोधन तथा देश-विदेश में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में प्रधानमंत्री जी द्वारा हिंदी में किए गए संबोधन से सिर्फ देश ही नहीं बल्कि विदेश में

रहने वाले भारतीयों को भी बहुत गर्व होता है। प्रधानमंत्री जी द्वारा भारत की विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में स्थानीय लोगों को संबोधित करने का प्रयास भी क्षेत्रीय भाषाओं के प्रति सम्मान व्यक्त करने का एक सराहनीय और अनुकरणीय कदम है।

मुझे लगता है कि, जब हम आजादी के 75वें वर्ष में, अमृत पर्व में, प्रवेश कर रहे हैं, तो हमें इस वर्ष राष्ट्रकार्यों को हाथ में लेना चाहिए। महात्मा गांधी जी ने राजभाषा को राष्ट्रीयता के साथ जोड़ा था। हमारे आजादी के आंदोलन के तीन स्तंभ थे, स्वभाषा, स्वदेशी और स्वराज। स्वराज की कल्पना, स्वदेशी के संस्कार से उत्पन्न हुई स्वभाषा। आजादी के आंदोलन की यदि कोई सशक्त नींव थी, तो वह स्वभाषा ही थी। इस स्वभाषा से स्वदेशी के संस्कार ने जन्म लिया, स्वराज की कल्पना मिली, जिसने 15 अगस्त 1947 को आजादी दिलाई। इस आजादी के आंदोलन में हमारी स्वभाषाओं में राजभाषा और स्थानीय भाषाओं की भूमिका पर जो अलग-अलग साहित्य की रचनाएँ हुई हैं, इसका एक संग्रह कर देश के सामने रखना चाहिए ताकि नई पीढ़ी को स्वभाषा का महत्व पता चल सके।

दूसरा विषय जो मेरे मन में है, क्षेत्रीय इतिहास को राजभाषा में ढंग से अनुवादित करना चाहिए। विभिन्न क्षेत्रों की गौरवशाली संस्कृति और उन क्षेत्रों के महानायकों के इतिहास का राजभाषा में सही भाव के साथ अनुवाद होना चाहिए और ये अनुवादित ग्रंथ देश के विभिन्न ग्रंथालयों में उपलब्ध भी होने चाहिए। मैं मानता हूं कि आजादी के 75वें साल में मनाए जा रहे अमृत महोत्सव पर राष्ट्र की एकता और अखंडता के लिए हमारा बहुत बड़ा काम होगा।

संविधान द्वारा दिए गए राजभाषा संबंधी दायित्वों के निर्वहन की दिशा में माननीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में सरकारी काम-काज मूल रूप से हिंदी में किया जा रहा है। गृह मंत्रालय में सभी फाइलें हिंदी में प्रस्तुत की जाती हैं, क्योंकि मेरा मानना है कि हिंदी में कार्य कर हम अपने संवैधानिक दायित्व का निर्वहन तो कर ही रहे हैं, आम-जन तक सरकार की नीतियों और कार्यक्रमों की जानकारी आम जनता की भाषा में देने का महत्वपूर्ण काम भी इसके साथ ही होता है।

आइए! हिंदी दिवस के इस पावन पर्व पर हम प्रतिज्ञा लें कि हम अपने राष्ट्रीय कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करेंगे और अधिक से अधिक मूल कार्य हिंदी में कर संवैधानिक दायित्वों का निर्वहन करेंगे।

हिंदी दिवस के अवसर पर सभी देशवासियो को पुन: हार्दिक शुभकामनाएं देता हूं, वंदे मातरम !

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2021

(अमित शाह)

आज़ादी का अमृत महोत्सव

डॉ सुमीत जैरथ, आई.ए.एस.
सचिव
Dr. SUMEET JERATH, I.A.S.
Secretary

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS

अ.शा.पत्र सं.-11034/07/2021-रा.भा.(नीति)

दिनांक : 10 अगस्त 2021

आदरणीय महोदय,

विषय : 14 सितंबर, 2021 में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह के आयोजन के संबंध में।

संदर्भ: कार्यालय ज्ञापन संख्या 1/14034/2/87- रा.भा. (का.-1) दिनांक 21.04.1987 एवं 23.09.87 (संलग्न)

अपनी भाषा के प्रति लगाव और अनुराग राष्ट्र प्रेम का ही एक रूप है। हिंदी ने सभी भारतवासियों को एक सूत्र में पिरोकर सदैव अनेकता में एकता की भावना को पुष्ट किया है। **संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा का दर्जा प्रदान किया। इस पावन दिवस की स्मृति में प्रतिवर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है।** वर्ष 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई और यह दायित्व सौंपा गया कि केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों/मंत्रालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में अधिक से अधिक कार्य हिंदी में किया जाना सुनिश्चित किया जाए।

2. संविधान सभा ने हम सबको यह संवैधानिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्व सौंपा कि हम संविधान के अनुच्छेद 343 और 351 के अनुसार राजभाषा हिंदी का अधिकतम प्रयोग करते हुए प्रचार-प्रसार बढ़ाएं। **अनुच्छेद 351 के अनुसार संघ का यह कर्तव्य होगा कि वह हिंदी का प्रसार बढ़ाए, उसका विकास करे, जिससे वह भारत की सामासिक संस्कृति के सभी तत्वों की अभिव्यक्ति का माध्यम बन सके और उसकी प्रकृति में हस्तक्षेप किए बिना हिन्दुस्तानी में और आठवीं अनुसूची में विनिर्दिष्ट भारत की अन्य भाषाओं में प्रयुक्त रूप, शैली और पदों को आत्मसात करते हुए और जहां आवश्यक या वांछनीय हो वहां उसके शब्द भंडार के लिए मुख्यत: संस्कृत से और गौणत: अन्य भाषाओं से शब्द ग्रहण करते हुए उसकी समृद्धि सुनिश्चित करे।"**

3. राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय केंद्र सरकार के कार्यालयों/बैंकों/उपक्रमों आदि में राजभाषा हिंदी के संवर्धन के लिए सदैव ऊर्जावान और निरंतर प्रयासरत है। अधिक से अधिक सरकारी कामकाज हिंदी में हो इसके लिए विभाग द्वारा सभी आवश्यक कदम

तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन, जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001
फोन : (91) (11) 23438266, फैक्स : (91) (11) 23438267, ई-मेल : secy-ol@nic.in

उठाए जा रहे हैं और **माननीय प्रधानमंत्री जी के आत्मनिर्भर भारत : स्थानीय के लिए मुखर हों (Self Reliant India- Be vocal for local)** के अभियान को आगे बढ़ाते हुए राजभाषा विभाग द्वारा सी-डेक पुणे के माध्यम से निर्मित स्मृति आधारित अनुवाद टूल **'कंठस्थ'** के विस्तृत उपयोग पर जोर दिया जा रहा है जिससे अनुवाद के क्षेत्र में समय की बचत करने के साथ-साथ एकरूपता और उत्कृष्टता भी सुनिश्चित की जा सके। साथ ही बहुभाषी माध्यम से हिंदी स्वयं शिक्षण **'लीला सॉफ्टवेयर'** के भी प्रचार-प्रसार का काम किया जा रहा है।

4. राजभाषा संकल्प 1968 के अनुसार हमें हिंदी के प्रसार एवं विकास की गति को और तीव्र करना है, एक अधिक गहन एवं व्यापक कार्यक्रम तैयार करके, उसे कार्यान्वित करना है। अत: राजभाषा विभाग माननीय प्रधानमंत्री जी के स्मृति विज्ञान (Mnemonics) के प्रयोग से प्रेरणा लेते हुए 12 प्र (प्रेरणा, प्रोत्साहन, प्रेम, प्राइज(पुरस्कार), प्रशिक्षण, प्रयोग, प्रचार, प्रसार, प्रबंधन, प्रोन्नति, प्रतिबद्धता और प्रयास की रणनीति को लेकर अग्रसर हो रहा है।

5. राजभाषा नियम, 1976 के नियम 12 के अनुसार केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व है कि वह राजभाषा अधिनियम 1963, नियमों तथा समय-समय पर राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा-निर्देशों का समुचित रूप से अनुपालन सुनिश्चित कराएं, इन प्रयोजनों के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच-बिंदु बनवाएं और उपाय करें।

6. माननीय प्रधानमंत्री जी की अध्यक्षता में हुई पिछली केंद्रीय हिंदी समिति की बैठक में दिए गए निर्देशानुसार सामाजिक और सरकारी हिंदी के अंतर को कम करना है। आज ज़रूरत इस बात की भी है कि हम हिंदी को इसके सरल रूप में अपनाकर अपने सभी सरकारी कार्य हिंदी में करने को प्राथमिकता दें। हमें यह प्रण करना होगा कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिक से अधिक प्रयोग करेंगे, यही संविधान का सच्चा अनुपालन होगा। इस संदर्भ में प्रसिद्ध कवि महावीर प्रसाद द्विवेदी जी का कथन हमें प्रेरित करता है कि **'आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए; भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।'**

7. सरकार द्वारा कोरोना संबंधी जारी दिशा-निर्देशों को ध्यान में रखते हुए हिंदी दिवस-2021 के शुभ अवसर पर सितंबर, 2021 में हिंदी दिवस/सप्ताह/पखवाड़ा/माह का आयोजन/प्रतियोगिताएं ऊर्जा, उत्साह और उल्लास के साथ की जाएं।

8. 14 सितंबर हिंदी दिवस-2021 के अवसर पर राजभाषा प्रतिज्ञा लें ताकि हम संविधान द्वारा दिए गए दायित्वों का निर्वहन कर सकें। (राजभाषा प्रतिज्ञा संलग्न है)।

9. विगत वर्ष की भांति ही मंत्रालयों/विभागों में प्रदर्शन हेतु हिंदी विद्वानों/विशिष्ट व्यक्तियों की सूक्तियों के पोस्टर/बैनर/स्टैंडी आदि बनाए जाएं। **कुछ सूक्तियां संलग्न हैं।**

10. राजभाषा हिंदी के प्रचार व प्रसार को प्रभावी एवं व्यापक बनाने के लिए मंत्रालय/विभाग अपने अधीनस्थ कार्यालयों, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों तथा वित्तीय संस्थाओं आदि को भी आवश्यक दिशा-निर्देश जारी करें। यह भी अनुरोध है कि इस संबंध में की गई कार्रवाई से राजभाषा विभाग को अवगत कराएं।

जय राज भाषा ! जय हिंद !

धन्यवाद,

सुमीत जैरथ

10/08/2021

(डॉ. सुमीत जैरथ)
सचिव, राजभाषा विभाग

भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों के सचिव/केंद्र सरकार के उपक्रमों और राष्ट्रीयकृत बैंकों के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

अनुक्रमणिका

संदेश	श्री सी एम साने, महानिदेशक
संदेश	श्री अविनाश जाधव, उपनिदेशक
संदेश	श्री अनुपम जाखड़, उपनिदेशक
संपादकीय	श्री आनंद कुमार सिंह
टैक्स मास	श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया
इच्छापुर-मेरा गांव	
कोविड-19 एवं कच्चे तेल की कीमत	श्री आकाश सिंह हाड़ा
ऐसा भी होता है...	श्री आनंद कुमार सिंह
भारत दर्शनः कही-अनकही बातें	श्री जय राम सिंह
भूख के खातिर	श्री इमरान खाटीक
कवि बिहारी	
तोरणमाल हिल स्टेशन	श्री शरद धनगर
भारत में त्योहारों के महत्व	श्री हरीश कुमार
भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का संघ सरकार (वाणिज्यिक) की 31 मार्च 2019 को समाप्त वर्ष के लिए अनुपालन लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां- 2020 की रिपोर्ट संख्या - 18	
कार्यालय में वन आईएएडी वन सिस्टम(ओआईओएस) का कार्यान्वयन	
राजभाषा संबंधी जानकारी	
सरकार के कार्मिकों के लिए राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रोत्साहन योजनाएं	
आपके पत्र	
राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य	

संदेश



मुझे अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि कार्यालय द्वारा त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के सातवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास की दिशा में पत्रिका प्रकाशन सार्थक कदम है। पत्रिकाएं राजभाषा हिंदी की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं तथा हिंदी के प्रति रुचि जागृत करती हैं।

कार्यालयी कामकाज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने हेतु यथासंभव प्रयास किया जाना चाहिए। प्रयोग की जाने वाली हिंदी में सरल एवं प्रचलित शब्दों का प्रयोग करना चाहिए जिससे हिंदी का प्रयोग और अधिक सुगम हो सके। ई-टूल्स के प्रयोग से हिंदी का प्रयोग आसान हुआ है।

पत्रिका के सातवें अंक के प्रकाशन को सफल बनाने में सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों का धन्यवाद। प्राप्त रचनाओं के सुंदर प्रस्तुतीकरण हेतु संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

आशा करता हूँ कि हम सभी एक साथ मिलकर राजभाषा के विकास हेतु सदैव प्रयत्नशील रहेंगे तथा एक दूसरे का सहयोग करते रहेंगे।

(सी एम साने)

महानिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश



त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के सातवें अंक का प्रकाशन बड़े ही हर्ष का विषय है। पूर्व में प्रकाशित अंको के समान यह अंक भी राजभाषा हिंदी के विकास हेतु एक उचित प्रयास है। पत्रिका में सम्मिलित रचनाओं द्वारा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों का राजभाषा के प्रति लगाव एवं स्नेह प्रदर्शित होता है। पत्रिकाएं राजभाषा के विकास हेतु एक उचित माध्यम है जो सरलता के साथ अपने उद्देश्य को प्राप्त करती हैं। पत्रिका के माध्यम से अधिकारियों एवं कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को प्रोत्साहन मिलता है।

कार्यालयी कार्यों में हिंदी का प्रयोग हमारा कर्तव्य है। कार्यालयी कार्यों में हिंदी के प्रयोग हेतु यथासंभव प्रयास करते हुए राजभाषा के विकास के लिए प्रयत्नशील रहना चाहिए। वर्तमान समय में हिंदी भाषा के प्रयोग हेतु कई नए एप्लीकेशन, शब्दकोष आदि उपलब्ध है जिनके कारण हिंदी का प्रयोग आसान हो गया है। आज विश्व पटल पर दिन-प्रतिदिन हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है तथा हिंदी को सप्रेम अपनाया जा रहा है।

पत्रिका के सातवें अंक में सहयोग करने वाले समस्त रचनाकारों को धन्यवाद तथा संपादकीय मंडल को हार्दिक शुभकामनाएं।

मै यह आशा करता हूँ कि पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का सातवाँ अंक आप सभी के लिए रुचिकर एवं ज्ञानप्रद होगा तथा राजभाषा हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करेगा।

(अविनाश जाधव)

उपनिदेशक

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

संदेश



यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि कार्यालय द्वारा हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के सातवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका राजभाषा के विकास की दिशा में एक उपयोगी माध्यम है। पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए कार्यालयी कार्यों में हिंदी के प्रयोग हेतु प्रेरित करती है।

कार्यालय के इस कार्य की सराहना करते हुए हिंदी के प्रोत्साहन के लिए लगातार ऐसे प्रयास चलते रहें, ऐसी कामना करता हूँ।

पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु संपादकीय मंडल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

(अनुपम जाखड़)

उपनिदेशक

उपनिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, देहरादून

उप-कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई



संपादकीय

राजभाषा के प्रचार-प्रसार के क्रम में त्रैमासिक हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का सातवां संस्करण आप सभी को सादर समर्पित है। हिंदी के प्रयोग हेतु प्रोत्साहित करने के उद्देश्य स्वरुप पत्रिका का यह अंक प्रस्तुत है। रचनाकारों द्वारा प्रस्तुत रचनाओं के माध्यम से बहुमूल्य विचारों को संकलित करने का प्रयास किया गया है। पत्रिका सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी के प्रति प्रोत्साहित करती है।

कार्यालयी कार्य राजभाषा हिंदी में कार्य करना हमारा दायित्व है। हिंदी भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। भाषा के विभिन्न विधाओं में भिन्न-भिन्न विषयों पर आधारित रचनाएं पत्रिका में सम्मिलित की जाती है जो भाषा के प्रति उत्साह को जागृत करती है। विचारों का रचनाओं के रुप में प्रस्तुतीकरण एक बड़ा कार्य है जो विचारों को एक सार्थक उद्देश्य प्रदान करता है तथा उन विचारों को एक बड़े समूह तक पहुंचाने में पत्रिकाएं एक उपयुक्त माध्यम हैं। पत्रिका प्रकाशन विचारों की अभिव्यक्ति की क्षमता को बढ़ाते हुए हिंदी के प्रयोग के प्रति प्रेरित करता है।

वरिष्ठ अधिकारियों के प्रति हार्दिक आभार जिन्होंने पत्रिका के प्रकाशन हेतु समय समय पर उचित मार्गदर्शन करते हुए प्रोत्साहित किया। पत्रिका के सफल प्रकाशन में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रुप से सहयोग करने वाले सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को बहुत बहुत धन्यवाद। हमें पूर्ण विश्वास है कि पत्रिका के आगामी अंको के लिए भी आपका मार्गदर्शन, प्रोत्साहन एवं सहयोग मिलता रहेगा।

हमें आशा है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार हेतु समर्पित यह अंक आपको पसंद आएगा। आपसे अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने बहुमूल्य विचारों से हमें अवगत कराएं तथा अपने मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन से हमारा उत्साहवर्धन करें।

आनंद कुमार सिंह

कनिष्ठ अनुवादक



स्वप्ना फुलपाडिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

टैक्स मास

ऐ नागरिक, उठो और आनन्दित हो

टैक्स मास आ गया है,

आपकी पसंद हों या ना हो

पेंसिल इरेज़र और पेपर तोड़ो

एक और वित्तीय शरारत के लिए इसका समय जोड़ो

बड़ी रसीदों के बॉक्स का धूल हटा

और हर साल की तरह अपना टैक्स रूटीन दोहरा

स्पष्ट काली स्याही से भर दे अपना फ़ॉर्म

चेक बुक तोड़े, पैन नंबर भरें

हर स्थान आप जो कुछ भी प्राप्त करना हैं उससे भरें

और जमा कर अपना रिटर्न

प्रार्थना करें कोई लेखापरीक्षक

आपके धोखा और चोरी का पता न लगाए।

****



स्वप्ना फुलपाडिया

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इच्छापुर-मेरा गांव

मेरे गांव का नाम इच्छापुर है। यह पश्चिम बंगाल के 24 परगना जिले में है। यह प्रकृति के बीच स्थित है। हुगली नदी पूरे गांव में बहती है। मछली पकड़ने वाली छोटी नावें हमेशा नदी के चारों ओर दिखाई देती हैं। मैं उन्हें देखकर और शाम को वापस आने पर मछली पाने की आशा के साथ बहुत खुश होती थी। मुझे नावों में नदी पार करना पसंद है। बहुत ही प्यारा अनुभव है।

मेरे नाना का घर मेरे स्कूल के रास्ते में था। रोज मैं उनसे उनके मुक्केबाजी प्रतिस्पर्धियों के बारे में बात करके बहुत खुश होती थी।

हमारे समुदाय में लगभग 150 से 200 परिवार शामिल हैं; यहां रहने वाले लोगों की कुल संख्या लगभग 2000 है। हमारा चार लोगों का परिवार है - मेरे माता-पिता, मेरा छोटा भाई और मैं। जब मैं घर के कामों में अपनी माँ की मदद करती थी, तो मेरा भाई इधर-उधर खेलता था। इच्छापुर एक छोटा सा गाँव है, लेकिन एक प्यारा सा गाँव है। सड़क का एक लंबा खंड पूरे शहर में चलता है । छोटी मिट्टी की झोपड़ियाँ और कॉटेज सड़क के दोनों ओर दो समानांतर पंक्तियों में एक दूसरे के सामने स्थित होकर इसकी शोभा बढ़ाते हैं। इस क्षेत्र में लगभग सब घराने मिट्टी और बालू के बने हैं; केवल कुछ मुट्ठी भर ही सीमेंट से बनी इमारतें हैं।

हमारे यहां कुछ सुविधाएं हैं। गांव के केंद्र में सामुदायिक गांव स्कूल है, यह सरकार द्वारा सहायता प्राप्त है। यह क्षेत्र का एकमात्र शिक्षण संस्थान है जबकि कोई कॉलेज नहीं हैं। स्कूल की इमारत दो मंजिला है और इसमें कक्षा 1 से 8 तक के छात्र पढ़ते हैं।

ग्राम पंचायत भवन कंक्रीट से बना एक और भवन है। गाँव के लोगों से संबंधित सभी छोटे-मोटे मामले यहीं ग्राम न्यायालय में निपटाए जाते हैं। सदन की अध्यक्षता पंच और उनके अन्य सदस्य करते हैं।





स्थानीय बाजार हमारे क्षेत्र से 10 मिनट की दूरी पर है। यदि किसी को कोई आवश्यक वस्तु या खाद्य पदार्थ खरीदना है तो वह पैदल ही बाजार जा सकता है; वे 5 मिनट की रिक्शा की सवारी भी कर सकते हैं। बाजार उन दुकानदारों से भरा हुआ होता है जो आवश्यक उत्पाद बेचते हैं। बाजार में एक सरकारी राशन की दुकान भी है। सब्सिडी वाले राशन के अपने हिस्से के लिए पूरा गाँव हर महीने एक बार राशन की दुकान के सामने कतार में लग जाता है। इन दुकानों के अलावा गांव में ही यहां-वहां चार-पांच छोटी-छोटी दुकानें हैं।

हमारे गांव में एक घनिष्ठ समुदाय है - यहां हर कोई एक-दूसरे को जानता है। हर शाम, मेरे पड़ोसी झोपड़ियों के दोस्त और मैं खेलने के लिए खेतों में इकट्ठा होते थे। हम ज्यादातर लुका-छिपी और कबड्डी खेलते थे। हर गली में मौजूद लैम्प-पोस्टों से सड़कें जगमगाती रहती हैं।



इच्छापुर में लोगों का मुख्य व्यवसाय शारीरिक श्रम और कृषि है। अपनी आठवीं कक्षा की शिक्षा पूरी करने के बाद, कुछ लोग उच्च अध्ययन के लिए कलकत्ता(कोलकाता) शहर चले जाते हैं; सरकार इस अवसर के लिए वार्षिक छात्रवृत्ति वितरित करती है।

प्रकृति की गोद में बसा मेरा गांव हरियाली से घिरा है। शहरों की तरह, प्रदूषण ने अभी तक हमारे आसपास की हवा में प्रवेश नहीं किया है। यद्यपि शहरी जीवन अपने निवासियों को कई लाभ और सुविधा प्रदान करता है। मैं अपने छोटे से गांव में छोटे और शांतिपूर्ण जीवन से संतुष्ट हूं।

****



आकाश सिंह हाड़ा

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोविड-19 एवं कच्चे तेल की कीमत

कोविड-19 कोरोना महामारी से पूरा विश्व गंभीर रुप से प्रभावित हुआ है। जहाँ एक ओर इस महामारी से विशाल स्तर पर जनहानि हुई है, वहीं दूसरी ओर इसके रोकथाम एवं सुरक्षात्मक प्रयासों यथा लॉकडाउन इत्यादि में वैश्विक स्तर पर अर्थव्यवस्था में मंदी से उत्पन्न हालात से कच्चे तेल की मांग में भारी कमी आई है। जिसके प्रभाव से वर्ष 2020-21 में कच्चे तेल की कीमत में भारी गिरावट देखने को मिली। कीमत नियंत्रण के लिए प्रमुख तेल उत्पादकों ने उत्पादन कटौती पर सहमति जताई जिसके परिणामस्वरुप अंतर्राष्ट्रीय बाजार में ब्रेंट क्रुड ऑयल उच्च स्तर 69 डॉलर प्रति बैरल वही डब्ल्यू आई टी (वेस्ट टेक्सास इंटरमीडिएट) भी अपने उच्च स्तर 66 डॉलर प्रति बैरल पर पहुंच गया।

तेल मूल्य का निर्धारण निर्यातक देशों की साझेदारी के आधार पर होता है। उत्पादक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तेल की मांग एवं आपूर्ति को सदैव अपने पक्ष में रखने का प्रयास करते हैं। भारत अपने कच्चे तेल आवश्यकताओं के 80% से अधिक के लिए आयात पर निर्भर है जिसके दुष्प्रभाव के रूप में अंतर्राष्ट्रीय कीमत भारत में तेल उत्पाद कीमतों पर भारी प्रभाव डालते हैं।

कोविड-19 महामारी में सभी राष्ट्रों को समग्र प्रयास से लड़ना होगा। मानवीय एवं आर्थिक, दोहरे मांग से जुझ रहे राष्ट्रों पर बढ़ी हुई क्रुड की कीमत तीसरी मार है। अतः वर्तमान परिप्रेक्ष्य को दृष्टिगत रखना अति आवश्यक है। स्वच्छ वैकल्पिक ईंधन के प्रयोग को बढाने से तेल के आयात को घटाया जा सकता है। इस संबंध में किए जा रहे प्रयासों का प्रभावी रुप से क्रियान्वयन आवश्यक है।

कोरोना से उपजी वैश्विक मंदी एवं हालातों से निपटने के लिए प्रभावी रुप से समग्र प्रयासों की आवश्यकता है जिसके लिए नीति निर्माण एवं प्रभावी क्रियान्वयन की आवश्यकता है।

***



आनंद कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

ऐसा भी होता है...

हम महानगर के कार्यालय में नियुक्त एक कर्मचारी हैं जो प्रतिदिन कार्यालय द्वारा उपस्थिति हेतु निर्धारित समय पूर्वाह्न 09:30 से पूर्व कार्यालय में उपस्थित रहते है। हम प्रायः अपने निवास स्थान से सुबह 07:30 बजे कार्यालय के लिए प्रस्थान करते हैं और पहले ऑटो-रिक्सा फिर लोकल ट्रेन तथा पुनः ऑटो-रिक्सा की सहायता से कार्यालय पूर्वाह्न 9 से 09:30 बजे के बीच में पहुंच जाते हैं। यह जानकारी आगे वर्णित घटना के संबंध में है।

अब हम भूमिका को और अधिक न बढ़ाते हुए मूल घटना पर आते हैं। कार्यालय के सप्ताह के अंतिम कार्यदिवस शुक्रवार को एक परिपत्र परिचालित किया गया जिसके द्वारा यह सूचित किया गया कि समूह अधिकारी द्वारा यह आदेश दिया गया कि सोमवार को सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को पूर्वाह्न 09:30 तक कार्यालय में उपस्थित होना है। इस परिपत्र का हमारे ऊपर कुछ ज्यादा प्रभाव नहीं पड़ा क्योंकि हम तो लगभग प्रतिदिन निर्धारित समय से पूर्व ही कार्यालय में उपस्थित रहते हैं फिर भी हमने सोचा कि सोमवार को अपने निवास स्थान से 15 मिनट पहले ही निकलेंगे। सोमवार को हमने अपने निवास स्थान से सुबह 07:15 बजे कार्यालय के लिए प्रस्थान किया और स्टेशन जाने के लिए 2 मिनट में ऑटो स्टैंड पर पहुंच गए। वहाँ से एक ऑटो में स्टेशन के लिए किराया विभाजन के आधार पर तीन व्यक्ति जाते हैं। जैसे ही हम स्टैंड पर पहुंचे एक ऑटो गई और हम कतार में लगी अगली ऑटो में बैठ गए। ऑटो चालक के साथ-साथ हमने भी बहुत देर तक प्रतीक्षा किया लेकिन कोई और यात्री नहीं मिला। जब बहुत देर होने लगी तो हमने चालक से कहा कि आप चलिए यदि बीच में कोई मिलेगा तो ठीक नहीं तो पूरा किराया हम दे देंगें। चालक ने आराम से चलाते हुए हमें स्टेशन पहुंचाया। हमने पूरा किराया दिया और जल्दी-जल्दी प्लेटफॉर्म की ओर दौड़ पड़े। प्लेटफॉर्म के पुल पर ही पहुंचे थे कि एक लोकल ट्रेन अपने निर्धारित समय से लगभग 2 मिनट पूर्व ही चली गई। हम प्लेटफॉर्म पर पहुंचे और अगली ट्रेन जो 5 मिनट बाद आने वाली थी, उसकी प्रतीक्षा करने लगे। तभी पता चला यह ट्रेन रद्द कर दी गई है। हम कुछ सोचते हुए प्लेटफॉर्म पर स्थित एक बेंच पर बैठ गए। हद तो तब हो गई जब आने वाली अगली ट्रेन महिला-विशेष(लेडिज स्पेशल) थी। अब हम बेंच पर बैठे हुए विचारों में खोकर

अगले ट्रेन की प्रतीक्षा करने लगे। कुछ देर के बाद अगली ट्रेन आई। ट्रेन यात्रियों से भरी हुई थी। हम प्रायः भरी हुई ट्रेन से यात्रा नहीं करते लेकिन आज परिस्थिति कुछ अलग थी। एक तो देर हो रहा था और ऊपर से मन-मस्तिष्क में शुक्रवार का परिपत्र घुम रहा था जिसने हमें उस भरी हुई ट्रेन से यात्रा करने के लिए विवश कर दिया। वह भरी हुई ट्रेन जिसमें आने वाले स्टेशनों पर यात्रियों की संख्या और बढ़ती ही जा रही थी। हमारी स्थिति को वही अनुभव कर सकता है जिसने कभी भरी हुई लोकन ट्रेन में यात्रा की हो। हम अपने निर्धारित स्टेशन पर उतरने के पश्चात शीघ्रता से कार्यालय जाने के लिए ऑटो स्टैंड पर पहुंचे। कार्यालय के लिए ऑटो चालकों से पूछना प्रारंभ किया कई ऑटो चालकों से पूछने के पश्चात एक चालक तैयार हुए। ऑटो में बैठे हुए निगाहें कलाई घड़ी और यातायात पर थीं और मन-मस्तिष्क में समय पर उपस्थित होने का परिपत्र एवं कार्यालय लगातार चल रहे थे। कार्यालय परिसर में लिफ्ट के पास पहुंचे। कार्यालय परिसर में उपलब्ध दो लिफ्ट द्वितीय तथा प्रथम तल पर थे और ऊपर की तरफ जा रहे थे। हमें आठवें तल पर जाना था। हमने सोचा सीढ़ी से ही चलते हैं क्योंकि 10 बज चुके थे और किसी भी समय उपस्थिति रजिस्टर समूह अधिकारी के पास जा सकता था। हम सीढ़ी से कार्यालय में पहुंचे। हमने समूह अधिकारी के कक्ष की तरफ देखा। हमने देखा कि एक कर्मचारी एक रजिस्टर लेकर कक्ष में जा रहे थे। हमें आभास हुआ कि वह रजिस्टर उपस्थिति रजिस्टर था लेकिन इससे पहले कि हम आवाज देते वह समूह अधिकारी के कक्ष में प्रवेश हेतु अनुमति मांग रहे थे। हमारे आँखों के सामने रजिस्टर चला गया और हम देखते रह गए। उस दिन हमें छोड़कर कार्यालय के सभी अधिकारी तथा कर्मचारी समय पर कार्यालय में उपस्थित थे। थोड़ी देर के बाद जब रजिस्टर समूह अधिकारी के कक्ष से बाहर आया तो हमने देखा एक मात्र हमारे नाम के आगे उस दिन लाल स्याही से निशान लगा हुआ था। तब हमारे मुख से यही निकला "होइहि सोइ जो राम रचि राखा" और हम अपने कार्यालयी कार्य में लग गए।

(नोट- मात्र एक सांकेतिक घटना का वर्णन किया गया है। यदि किसी व्यक्ति या घटना के साथ इसकी समानता पाई जाती है तो वह मात्र एक संयोग है। कृपया इसे अन्यथा न लें।)

****



जय राम सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (नौवहन), मुंबई

भारत दर्शनः कही-अनकही बातें

घुमंतरा अर्थात् देशाटन, अर्थात् यायावरी - सीखने के लिए इससे बेहतर और कौन तरीका होगा ? प्रसिद्ध घुमन्तू राहुल सांकृत्यायन जी का उदाहरण हम सबके सामने है। उनके कारण ही हम रूसी, तिब्बती, चीनी आदि संस्कृतियों को इतने करीब से समझ पाए हैं। घूमना अर्थात् पर्यटन, जिसे आजकल सरकार द्वारा उद्योग का दर्जा प्राप्त है। पर्यटन की अपनी चुनौतियाँ होती हैं तो वहीं इसका अपना अलग आनन्द भी होता है । मैं सौभाग्यशाली था कि मुझे भारतीय वायुसेना में सेवा का अवसर मिला जिसमें अक्सर देश के किसी भी भाग में पोस्टिंग होती रहती है जिसके कारण अपने-आप मेरा भारत-भ्रमण हो गया । इस भारत-भ्रमण के दौरान देश के कई क्षेत्रों की कुछ विशेष बातें देखने-सीखने को मिलीं। उन्हीं में से कुछ इस संस्मरणात्मक लेख में प्रस्तुत हैं - हास-परिहास से भरे एक अलग अंदाज में।

उत्तर-पूर्वी भारतः- उत्तर-पूर्व के सातों - आठों राज्य बताते हैं कि यदि मानव चाहे तो धरती की हरियाली बचाई जा सकती है। त्रिपुरा का त्रिपुर-सुन्दरी पीठ - मतलब दस महाविद्या में से एक - यहाँ सीखा जा सकता है कि देश, भाषा और संस्कृति से प्रेम करने का तरीका क्या होता है। यदि एक अकेला राज्य चीन जैसी महाशक्ति से दो-दो हाथ करने के लिए हरदम तैयार हो तो वह दृश्य कैसा होगा - सिक्किम और अरुणाचल में देखें। अर्थपुर गाँव में कभी भी वर्षा नहीं होती क्योंकि यह 18000 फीट पर बादल से भी ऊपर बसा गाँव है। गिन के पाँच ही झोंपड़ियाँ हैं - लेकिन 'भारतमाता की जय' खूब सुनाई देगा। मेघालय सिखाता है कि विवाह के बाद भी बेटी अपने पिता का सरनेम रख सकती है और विरासत के समान हकदार वह भी है। रोज-रोज की वर्षा और भूकम्प में कैसे खुशी-खुशी जिया जाए - यह बात असम बताता है। लेकिन असम में एक बात का ध्यान रखना होगा। किसी फल-विक्रेता से केला और संतरा एक साथ कभी न माँगें। बवाल हो जाएगा। बेटा किसान और बेटी मुक्केबाज - यही दृश्य है आजकल मणिपुर का। सचमुच मेरीकॉम ने मणिपुर की फिजा ही बदल दी है। भारत का कोई भी राज्य आज तक जो नहीं कर पाया, मिजोरम ने कर दिखाया - शत-प्रतिशत साक्षरता।

पूर्वी भारतः- बंगाल सिखाता है कि बेटियाँ बेटों के बराबर नहीं होती, बीस होती हैं। घर में खाना पकाने की जिम्मेदारी बंगाल में पूरी तरह बदल गई है। बंगाल में यह भी सीखेंगे कि चाय, पानी या

सिगरेट पीने की वस्तु नहीं हैं, खाने की वस्तुएँ हैं - मतलब कि आप चाय भी खा सकते हैं और सिगरेट भी। आपलोग बंगाल में बाल या केश नहीं कटवा सकते, कटवाना ही है तो चूल कटवाना पड़ेगा। बंगाल में एक स्पेशल शब्द है - 'आस्ची' - इसका मतलब आना भी है और जाना भी। बारी मतलब खेत भी और बारी मतलब घर भी, बस इतना ध्यान रखें कि बारी में री को री ही रहने दें। यदि गलती से भी री का रा हो गया तो आप असभ्य माने जाएंगे। लेकिन बिहार! भाषाएँ तो कई हैं - मैथिली, भोजपुरी, मगही, वज्जिका, अंगिका आदि लेकिन परम्पराएँ समान हैं। दही - चिउड़ा - चिन्नी, लिट्टी - चोखा, ठेकुआ, सबको जोड़कर रखने के लिए काफी हैं और अब अंतर्राष्ट्रीय पकवान माने जा चुके हैं। भगवान जगन्नाथ की साक्षात कृपा का दर्शन ओडिशा गए बिना नहीं होगा। धन्य नाम है: पुरी। बंगला, तेलगू और संथालियों के बीच रहकर भी उड़िया भाषा यदि सुरक्षित है, फल-फूल रही है तो इसका श्रेय यहाँ के लोगों को जाता है। लेकिन अंडमान निकोबार नहीं गए मतलब भारत दर्शन नहीं हुआ । आदि मानव कैसे रहते रहे होंगे, आज भी देखा जा सकता है - पत्ता लपेटे या बिना पत्तों के भी। मुख्यभूमि से इतनी दूर होने के बावजूद देश और राष्ट्रभाषा से प्यार यहाँ देख सकते हैं । सेलुलर जेल तो जाना ही पड़ेगा।

उत्तर भारतः- कानपुर सिखाएगा कि हिन्दी में नया शब्द सृजन किस तरह से होना चाहिए । कन्टाप जैसे शब्द तो आपने सुने ही होंगे। शायद कई जन्मों की तपस्या के बाद ईश्वर किसी को हरियाणा में जन्म देकर पुरुष बनाते होंगे। कश्मीरी लोगों के संगीत और ज्ञान को देखकर समझ में आ जाएगा कि सच में यह महर्षि कश्यप की तपोभूमि है। यह भी समझ में आ जाएगा कि देव और दानव सचमुच एक ही पिता की सन्तान हैं, भाई-भाई हैं। बड़ा कब छोटा हो जाए और छोटा कब बड़ा हो जाए, कश्मीर में कह नहीं सकते। हिमाचल और उत्तराखंड में जाते ही पता चल जाएगा कि ये दोनों राज्य देवभूमि क्यों कहे जाते हैं। बल्ले-बल्ले करने के लिए पंजाब तो जाना ही पड़ेगा। भावुकता के बिना अदम्य वीरता के दर्शन पंजाब में ही कर सकते हैं। यहाँ डालडा और रिफाइन्ड ऑयल को घी कहा जाता है। असली घी मतलब देसी घी, बिना माँगे हर जगह उपलब्ध। मध्य प्रदेश भी शब्द सृजन में यूपी से होड़ा-होड़ी कर रहा है। कहीं भिया सुन लें तो यह न समझें कि 'हुआ'। भिया मतलब भैया होता है यहाँ लेकिन स्वच्छता यहाँ की जीवन-शैली बन चुकी है। तभी तो मध्यप्रदेश का इन्दौर शहर लगातार सबसे स्वच्छ शहर का खिताब जीतते जा रहा है ।

दक्षिण भारतः- दक्षिण भारत में सबसे बड़ी चीज देखी कि वहाँ लड़का-लड़की में भेद नहीं है। दोनों बराबर हैं। दक्षिण भारत में ही सीखने को मिला कि ट्रेन के जेनरल क्लास कोच और विशेषकर उसके शौचालय को साफ-सुथरा रखा जा सकता है, बस आत्मानुशासन चाहिए। यहाँ यह भी देखने को मिला कि हर टिकट अथवा फाइन के लिए टीटी पर्ची बना के देता है। बाकी जगहों के बारे में न ही पूछें तो बेहतर। राजस्थान और तेलंगाना अच्छे से बताते हैं कि पानी की हर बूँद कितनी कीमती है। केरल में सोने-चाँदी से लदी महिला अर्द्धरात्रि में भी अकेले कहीं आ जा सकती है। लक्षद्वीप के समुद्र-तटों की सुन्दरता बस एक बार देख लीजिए, फिर आप बार-बार आएँगे ।

पश्चिम भारतः- राजस्थान में भर-भर हाथ का घूँघट तानना जरूरी है, अन्य प्रदेशों की कोई भी चिन्ता नहीं। ईमानदारी यहाँ का सौंदर्य है । राजस्थान के एक शहर के चौक पर मेरी नई बीएसए साइकिल तीन दिन पड़ी रही। किसी ने छुआ भी नहीं। एक बार की बात है - हाईकोर्ट के जज का ड्राइवर शाम को जब मूड में आया तब मेरी साइकिल को ही अपनी समझकर चढ लिया और चला गया। सुबह में जब उसका नशा फटा तब बेचारा खोजते-खोजते पहुंचा और पैर पकड़कर माफी मांगने लगा। यदि यही घटना उत्तर भारत के किसी हिस्से में घटी होती तो यह सिद्ध करने में ही मेरी उम्र निकल जाती कि वह साइकिल मेरी थी। गुजरात दिखाएगा कि कैसे लड़का-लड़की बिना विवाह के भी साथ में सुख और इज्जत से रह सकते हैं। गुजराती लोग नौकरी-चाकरी करना नहीं चाहते। महाराष्ट्र से सीख सकते हैं कि अपनी भाषा, परम्परा और संस्कृति का सम्मान, अनुपालन और संवर्द्धन कैसे करना चाहिए। मनुष्य अपना पैर उठाता है तभी चल पाता है; मुंबई में प्रकृति के इस नियम को नेस्तनाबूद कर दिया गया है। यहाँ पाँव उठाए बिना भी चला जा सकता है, बस लोकल ट्रेन की भीड़ में शामिल हो जाइए। राजस्थानी लोग बड़े-बुजुर्गों का आदर-सम्मान खूब करते हैं । यहाँ कोई वृद्धाश्रम नहीं मिलेगा। भारत की संस्कृति पर जब अपसंस्कृति हावी हो जाएगी तब क्या होगा ? गोवा जाएँ और देखें। अपने देश का युवावर्ग पागल है गोवा घूमने के लिए। गोवा अब हनीमून स्पॉट के रूप में सबसे अधिक व्यस्त है। एक कहावत सुनी होगी - आँख से अंधा, नाम नयनसुख। देखना हो तो दादरा नागर हवेली जाएँ। सब कुछ सुन सकते हैं वहाँ, सिवाय रसपूर्ण मनोहारी दादरा के। दादरा का रसपान करना हो तो बनारस(वाराणसी) जाना पड़ेगा। लेकिन बिना पान खाए दादरा का मजा नहीं ले पाएँगे।

घूमने का असली मजा तब है जब कुछ दिन वहाँ गुजारे जाएं। महानायक का वह ऐड तो सुना ही होगा - "कुछ दिन तो गुजारिए गुजरात में"। घूमने और वहाँ रहने से भारत की भिन्न-भिन्न भाषाओं को सीखने का भी अवसर मिलता है। अपना भारत सचमुच विविधताओं से भरा देश है । ऐसी-ऐसी विविधताएं हैं कि विश्वास ही नहीं होता। परन्तु, इन विविधताओं के साथ ही भारत एक जीता-जागता राष्ट्रपुरुष है। ऐसा अनोखा देश संसार में अन्यत्र कहीं नहीं है। हमें अपने देश के हर हिस्से की विशेषताओं पर उतना ही गर्व होना चाहिए जितना अपने क्षेत्र की विशेषताओं पर हमें होता है ।

***



इमरान खाटीक

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"भूख के खातिर"

पानी से पेट भर कर जो सोते हैं, बेचारे रात में अकेले रोते हैं जो बच्चे अक्सर भूखे होते हैं।

एक भूख के खातिर ही हमने अपनों को छोड़ा है।

हर कदम पर रास्ता मोड़ा है।

किसी ने देश में तो किसी ने परदेश में जाकर अपनों को छोड़ा है।

इस भूख की शिद्दत के बारे में उनसे पूछो जिन्हें शाहीखाने से भी लज्जीज लगती है घर की सुखी रोटी।

पेट भर जाने पर एक अमीर ने जो फेंके थे चंद रोटी के टुकड़े कूड़े में, उसके लिए जानवर से आदमी को लडना पड़ा है।

कोई क्या जाने उस फकीर का दर्द जो रोटी देने वाले हाथों को मरता देख रो पड़ा है।

भूखा पेट भरने के लिए आपने कई को लड़ते- मरते हुए देखा होगा।

हाथ बढ़ाकर साथ दो उस गरीब का, उसकी नजर ने तुम में खुदा का अक्स देखा होगा।

अक्सर सहम जाता हूं मैं, ये सोच कर मेरे देश में भुखमरी क्यों है।

अगर तू मखलूक -ए खुदा है तो सिर्फ अमीर के मुंह में ही निवाला क्यों है।

मेरे वतन में उगाता है अनाज किसान फिर वही भूखा क्यों है।

****



इमरान खाटीक

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

"कवि बिहारी"

हिंदी के रीति साहित्य के लोकप्रिय कवि बिहारी को सब जानते हैं। बिहारी के पिता का नाम केशव राय था। जब ग्वालियर से इनके पिता औरछा आए, उस समय बिहारी 8 वर्ष के थे। बिहारी ने स्वामी नरहरी दास से संस्कृत का अध्ययन किया। बाद में इनके पिता औरछा छोड़कर वृंदावन आ गये। वहां बिहारी ने साहित्य और संगीत सीखा। वहीं पर शाहजहाँ से भेंट हुई। बादशाह इन्हें आगरा ले गए। वहां उन्होंने फारसी शायरी का अध्ययन किया। बिहारी जब राजा जयसिंह के यहां आए तो उन्होंने देखा कि, नई नवेली रानी के प्रेम में राजा जयसिंह इतने उलझ गए हैं कि राज-काज में उनका कम समय बीतने लगा है। बिहारी ने राजा को उलाहना देते हुए जागरूक करने के उद्देश्य से एक दोहा कहा जो बहुत ही प्रसिद्ध हुआ-

नहिं पराग नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल।
अली कली ही सौं बंध्यौ, आगे कौन हवाल॥

बिहारी का प्रसिद्ध ग्रंथ 713 दोहो का बिहारी 'सतसई' है। हिंदी के पिछले 1000 वर्षों में जितने ग्रंथ लिखे गए होंगे उनमें से प्रथम 10 ग्रंथों में बिहारी सतसई का नाम आता है।

बिहारी के दोहों की प्रशंसा में कहा गया है कि-

सतसइया के दोहरा ज्यों नावक के तीर।
देखन में छोटे लगैं घाव करैं गम्भीर।।

बिहारी के काव्य में श्रृंगार के संयोग पक्ष का विशेष चित्रण हुआ है। वियोग के भी चित्र उन्होंने अंकित किए हैं लेकिन उनका मन संयोग श्रृंगार में अधिक रमा है। बिहारी ने भक्ति और नीति के दोहे भी लिखें है। भक्ति के दोहे का उदाहरण-

मेरी भववाधा हरौ, राधा नागरि सोय।
जा तन की झाँई परे, स्याम हरित दुति होय।।

अलंकारों के सुंदर प्रयोग और गागर में सागर भरने में बिहारी चतुर थे। समास शक्ति की भाषा कम शब्दों में अधिक सार प्रकट करती है। बिहारी के दोहों में छंद मात्रा के नियम का पालन हुआ है। दोहा छंद उन्हें अधिक प्रिय रहा। दोहा और सोरठा छंदों में बिहारी ने कमाल कर दिया है। बिहारी ने नीति और व्यवहार के बारे में अपने दोहों में मार्मिक वर्णन किया है।

बिहारी की भाषा ब्रजभाषा रही। उनके समय तक ब्रजभाषा का क्षेत्र विस्तृत हो गया था। बिहारी का शब्द गठन और वाक्य विन्यास सुव्यवस्थित है। शुद्ध भाषा का प्रयोग और सरल भाषा का प्रयोग

दोनों गुण बिहारी में थे। शब्द चयन में बिहारी माहिर थे इस प्रकार कवि बिहारी का हिंदी काव्य में महत्वपूर्ण स्थान है।

****







शरद धनगर

लेखापरीक्षक

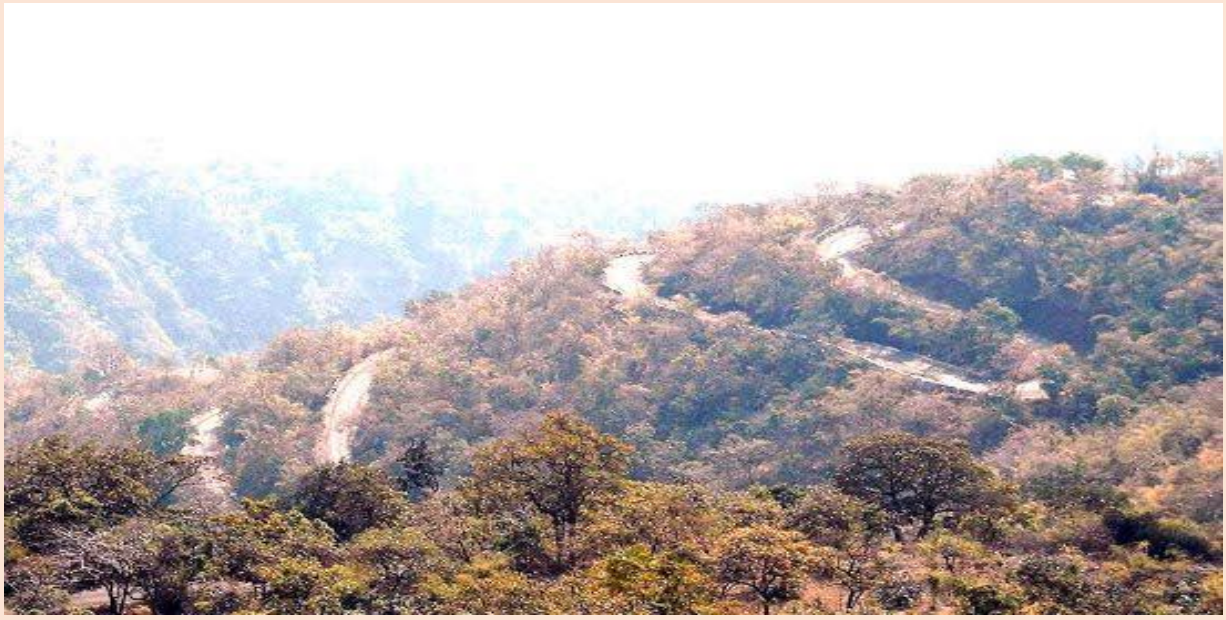
तोरणमाल हिल स्टेशन

तोरणमाल महाराष्ट्र राज्य के खानदेश में स्थित नंदुरबार जिले में अक्रानी तालुका में एक हिल स्टेशन है। महाबलेश्वर के बाद महाराष्ट्र राज्य के सबसे ठंडे स्थानों में दूसरे स्थान पर है। तोरणमाल खानदेश में सबसे प्रिय हिल स्टेशनों में से एक है। यह सतपुड़ा की चौथी श्रेणी में स्थित है। तोरणमाल हिल स्टेशन का वार्षिक औसत अधिकतम तापमान 37 डिग्री सेल्सियस और न्यूनतम 5.5 डिग्री सेल्सियस पहुँचती है। राज्य के प्रमुख शहरों और राजमार्गों से अलग होकर उत्तरी महाराष्ट्र में ठंडी हवा का एकमात्र स्थान है। सतपुड़ा पहाड़ियों में तोरणमाल का पठार पंचमढ़ी और अमरकंट की तुलना में अधिक है। खानदेश में बहुत कम लोग हैं जिन्हें तोरणमाल की सुंदरता का अंदाजा है। यहां कल तक, परिवहन सुविधाओं की कमी थी। हालाँकि, इन सभी का लाभ यह है कि तोरणमाल अभी भी अपनी प्राकृतिक सुंदरता बरकरार रखे हुए है। ठंडी हवा के कई स्थानों ने शहरीकरण और इसके बाद व्यावसायीकरण के बाद विकास की प्रसिद्धि के मद्देनजर अपनी असली सुंदरता खो दी है। लेकिन तोरणमाल एक अपवाद है। घाटों की कच्ची सड़कें, किनारे पर हरी-भरी हरियाली, हरी घास की कालीन और घना कोहरा, कालीन से ढकी पहाड़ियाँ, उन पर घना जंगल, गिरते झरने, ये सभी आसमान में घूमते हुए शहरी संस्कृति से अलग है। यही तोरणमाल की सुंदरता है। तोरणमाल हिल स्टेशन के रास्ते में, आपको कई घुमावदार सड़कों के साथ चक्कर लगाना पड़ता है। इस सड़क पर यात्रा का अनुभव अनूठा है, यह पर्यटकों के लिए एक परीक्षा है।

शोधकर्ताओं ने कहा कि, क्षेत्र में बड़ी संख्या में तोरण वृक्षों के कारण तोरणमाल को इसका नाम मिला होगा। पुराणों में तोरणमाल को 'तुरनामल' के नाम से भी जाना जाता है। ऐसा उल्लेख भी मिलता है कि एक तोरण द्वार पर रखे फूलों और पत्तियों की एक स्ट्रिंग है। तोरणमाल कुछ समय के लिए मालवा साम्राज्य और उसके राजा मांडू की राजधानी था। इसलिए तोरण मालवा साम्राज्य का प्रवेश द्वार था।

तोरणमाल को सात चरणों का घाट भी कहा जाता है। इसके सड़क पर यात्रा करते समय, एक, दो नहीं, बल्कि सात फेरे लेने के बाद, वाहन तोरणमाल तक पहुंचता है और प्रकृति की सुंदरता का

अनुभव होता है। गहरे हरे रंग की झाड़ियों, प्रकृति द्वारा फैलाए गए हरे रंग के कालीन, ऊंचे पहाड़, आसमान को चीरते हुए परिदृश्य, गर्जनशील झरनों के आनंद के साथ ऊंचाइयों पर पहुंचने के बाद, हवा प्राकृतिक सुंदरता से समृद्ध है। जब आप यहां पहुंचते हैं, तो आपको यात्रा की थकान महसूस नहीं होती है, लेकिन आपका मन प्रफुल्लित और खुश हो जाता है। सात कदम के घाट पर कालापानी नामक एक पर्वत है। कहा जाता हैं कि, गंभीर अपराध करने वाले कैदियों को अंग्रेजों ने पहाड़ से फेंक दिया था। तोरणमाल मठिया की शुरुआत में एक गुफा में मानव रूप में अर्जुन की एक मूर्ति है, इसलिए इसे नागार्जुन की गुफा भी कहा जाता है।



सीताखाई पॉइंट तोरणमाल के उत्तरपूर्वी भाग में स्थित है। कहा जाता हैं कि प्रचलित किंवदंती भामर के अनुसार, भगवान रामचंद्र सीता जी के साथ इस क्षेत्र से गुजरने के दौरान, एक रथ इस स्थान पर अटक गया और एक गुफा का निर्माण हुआ। घोड़े के खुरों के साथ-साथ रथ के दो पहियों के निशान अब भी यहाँ दिखाई देते हैं। भौगोलिक रूप से, गुफा चट्टानों और उच्च शंकु से घिरी हुई है।

सीताखाई जलप्रपात और सीताकुंड के बारे में कहा जाता हैं कि, जब सीता जी को प्यास लगी, तो भगवान रामचंद्र ने पृथ्वी के पेट में एक तीर मार दिया और पानी को जमीन से निकाला। उस स्थान को आज सीताकुंड के नाम से जाना जाता है। सीताखाई जलप्रपात से बहने वाला पानी आगे सर्किल नदी की ओर मोड़ दिया जाता है, बाद में यह नदी नर्मदा से मिलती है। तोरणमाल में बारिश में, नींबू के रस के साथ नींबू के रस में भिगोए गए मकई की भूसी का स्वाद अद्भुत है। कहा जाता है कि जब सूरज ढल जाता है, तो यहां सूरज मुस्कुराता है। इसलिए पर्यटक इस अद्भुत नजारे को देखने के लिए घंटों इंतजार करते हैं।

तोरणमाल हिल स्टेशन क्षेत्र में बने किले के अवशेषों को तोरणमाल किला कहा जाता है और इस पहाड़ी किले से क्षेत्र का इतिहास शुरू होता है। किले के पास अश्वत्थामा का मंदिर है। स्थानीय लोगों के

अनुसार, अश्वत्थामा इस किले में रहते थे। कुछ के अनुसार, महाभारत काल के दौरान, इस क्षेत्र में युवनाश्व नाम के एक राजा ने शासन किया था। इसकी राजधानी तोरणमाल थी।

तोरणमाल में दो खूबसूरत झीलें हैं। जब आप तोरणमाल पहुंचते हैं, तो ये दो झीलें एक विशेष पर्यटक आकर्षण हैं। यदि आप अपने परिवार के साथ बाहर जा रहे हैं, तो आप तोरणमाल के वन क्षेत्र में घूमते हुए नौका विहार का आनंद ले सकते हैं। इस स्थान पर नौका विहार उपलब्ध है। झील से पानी आगे चलकर सीताखाई झरने तक जाता है। इसके अलावा, खड़की और आमदरी भी तोरणमाल में पर्यटकों के आकर्षण का केंद्र हैं।

अतीत में, तोरणमाल को गोरक्षनाथ की तपोभूमि के रूप में भी जाना जाता था। माना जाता है कि गुरु गोरक्षनाथ और मछिंद्रनाथ ने तोरणमाल हिल स्टेशन के जंगल में तपस्या की थी, इसलिए महाशिवरात्रि पर तोरणमाल पर एक बड़ा जुलूस निकलता है।

आप तोरणमाल की ऊंची चोटियों से दूर देखते हैं, तो आप इस क्षेत्र में समृद्ध जनजातीय संस्कृति पर भी नज़र डाल सकते हैं। यहाँ के आदिवासी भाई तोरणमाल के मूल निवासी हैं।

बारिश के मौसम में तोरणमाल की प्राकृतिक सुंदरता लुभावनी होती है। तोरणमाल में क्षेत्र की प्राकृतिक सुंदरता के साथ-साथ कई जानवर और जड़ी-बूटियाँ हैं। क्योंकि तोरणमाल अभी भी मानवीय हस्तक्षेप से दूर है, यह क्षेत्र प्रदूषण से पूरी तरह मुक्त है। तोरणमाल क्षेत्र के जंगलों में कई पौधे जैसे आंवला, हिरदा, बेहड़ा, तुलसी, बेल, एलोवेरा, कामूनी, घनेरी, करवंद, आदि बड़ी संख्या में पाए जाते हैं। तोरणमाल का दौरा एक अविस्मरणीय अनुभव है।

तोरणमाल कैसे जाएं: तोरणमाल हिल स्टेशन जाने के लिए पहले जिला धुले (महाराष्ट्र) जाना है और वहाँ से बसें और निजी वाहन तोरणमाल तक उपलब्ध हैं।

****



हरीश कुमार
आंकड़ा प्रविष्टि प्रचालक

भारत में त्योहारों के महत्व

हमारा देश विभिन्नताओं के समूह का एक ऐसा देश है, जो अत्यंत दुर्लभ है और अद्भुत भी है। इस दुर्लभता और अद्भुत स्वरूप में आनंद तथा उल्लास की छटा दिखाई देती है। हमारे देश में जो भी त्योहार या पर्व मनाए जाते है, उनमे अनेकरूपता दिखाई पड़ती है। कुछ त्योहार ऋतू और मौसम के अनुसार मनाए जाते है, तो कुछ सांस्कृतिक या किसी घटना विशेष से संबंधित होते है।

हमारे देश में त्योहार का जाल बिछा हुआ है। यों कहा जाए, जो कोई बहुत बड़ी अत्युक्ति अथवा अनुचित बात नहीं होगी कि यहाँ आये दिन कोई-न-कोई त्योहार पड़ता ही रहता है। ऐसा इसलिए कि हमारे देश के ये त्यौहार किसी एक ही वर्ग, जाति या सम्प्रदाय से ही संबंधित नहीं होते हैं अपितु ये विभिन्न्न वर्गों, जातियों और सम्प्रदायों के द्वारा सम्पन्न और आयोजित होते रहते है। इसलिए ये त्योहार धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और सामाजिक होते है। इन सभी त्योहारों का कुछ न कुछ विशिष्ट अर्थ होता है। इस विशिष्ट अर्थ के साथ इनका कोई न कोई महत्व भी अवश्य होता है। इस महत्व में मानव की प्रकृति और दशा किसी-न-किसी रूप में अवश्य झलकती है।

इन त्योहारों का महत्व समाज और राष्ट्र की एकता-समृधि, प्रेम-एकता, मेल-मिलाप की दृष्टि से है। साम्प्रदायिक-एकता, धार्मिक-समन्वय, सामाजिक-समानता को हमारे भारतीय त्योहार समय-समय पर घटित होकर हमारे अंदर उत्पन्न करते चलते है। जातीय भेदभावना - और संकीर्णता के धुंध को ये त्योहार अपने अपार उल्लास और आनन्द के द्वारा छिन्न-भिन्न कर देते हैं। सबसे बड़ी बात तो यह होती है कि ये त्योहार अपने जन्मकाल से लेकर - अब तक उसी पवित्रता और सात्विकता की भावना को संजोए हुए हैं। युगपरिवर्तन और युग - का पटाक्षेपइन त्योहारों पर कोई प्रभाव नहीं डाल सका। इन त्योहारों का रूप चाहे बड़ा हो, चाहे छोटा, चाहे एक क्षेत्र विशेष तक ही सीमित हो, चाहे सम्पूर्ण समाज और राष्ट्र को प्रभावित करने वाला हो, अवश्यमेव श्रद्धा और विश्वास; नैतिकता और विशुद्धता का परिचायक है।

इससे कलुषता और हीनता की भावना समाप्त होती है और सच्चाई, निष्कपटता तथा आत्मविश्वास की उच्च और श्रेष्ठ भावना का जन्म होता है।

मानवीय मूल्यों और मानवीय आदर्शो को स्थापित करने वाले हमारे देश के त्योहार तो श्रृंखलाबद्ध है। एक त्योहार समाप्त हो रहा हो अथवा जैसे ही समाप्त हो गया, वैसे दूसरा त्योहार आ धमकता है। तात्पर्य यह है कि पूरे वर्ष हम त्योहारों के मधुर मिलन से जुड़े रहते है। हमे कभी भी फुरसत नही मिलती है। हमारे देश के प्रमुख त्योहारों में नागपंचमी, रक्षाबंधन, जन्माष्टमी, दशहरा, दीपावली, होली, ईद मुहर्रम, बकरीद, क्रिसमस, ओणम, बैसाखी, रथयात्रा, 15 अगस्त, 2 अक्टूबर, 26 जनवरी, गुरुनानक जयंती, रविदास जयंती, बाल-दिवस, महावीर जयंती, बुद्ध पूर्णिमा, राम नवमी आदि है।

नाग-पंचमी का त्योहार सावन मास की शुक्ल पक्ष की पंचमी को पूरे देश मे धूम-धाम के साथ मनाया जाता है। इससे हमारे मन मे नाग देवता (शेष नाग) के प्रति श्रद्धा-भावना व्यक्त होती है। लोगो का विश्वास है कि इस दिन नाग देवता प्रसन्न होते है। इससे हमारे धार्मिक संस्कार जगते है। **रक्षा-बंधन** के त्योहार का महत्व प्राचीन परंपरा के अनुसार **गुरु - महत्व** को प्रतिपादित करने से है। लोगों की यह मान्यता है कि इस दिन गुरु अपने शिष्य के हाथ मे रक्षा-सूत्र बांध करके उसे अभय रहने का वरदान देता है। गुरु को शिष्य यथाशक्ति दान-दक्षिणा देकर अपनी श्रद्धा-निष्ठा को प्रकट करता है। आज की परंपरा के अनुसार बहने अपने भाइयों के हाथ मे राखी का बंधन बांधकर उससे परस्पर प्रेम के निर्वाह का वचन दान लेती है। भाद्र मास में **जन्माष्टमी का त्योहार** भगवान श्रीकृष्ण के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। **दशहरा का त्योहार** पूरे देश मे आश्विन मास में मनाया जाता है। इसको मनाने के विभिन्न तौर-तरीके है, जिनसे हमारी धार्मिक भावनाएं जुड़ी हुई है। यह त्योहार लगातार आश्विन मास के शुक्ल पक्ष में परम् हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। **परम् शक्ति दुर्गा का नवरात्रि-पूजन समारोह** से जहाँ इस त्योहार का समापन करके हम सात्विक और आत्मिक शक्ति के महत्व को जुटाते है, वहीं दूसरी ओर धर्मसंस्थापक और मानवीय मूल्यों के रक्षक तथा इसके विरोधी तत्वों **रावण, बाली** आदि के विनाशकर्ता **श्रीराम की रामलीला** का चित्रांकन और छायांकन करके हम मानवता के पथ को प्रदर्शित करते है। दीपावली का त्योहार कार्तिक मास की अमावस के अंधकार को पराजित करने के लिए प्रकाश का आयोजन करके सम्पन्न किया जाता है। यह अज्ञान को छिन्न-भिन्न करके ज्ञान की स्थापना के अर्थ में होता है।

लोगों की धारणा है कि इस दिन ही भगवान राम रावण को पराजित करके अपनी राजधानी अयोध्या लौटे थे और उनके स्वागत में अगणित दीपमालाओं को पूरे धूम-धाम से सजाकर अयोध्यावासियों ने अपना अपार उत्साह प्रदर्शित किया था। होली के त्योहार का महत्व

स्वतः प्रकट है। इस आनन्द और उमंग से हम अपनी कटुता और दुर्भावना को भूलकर एक हो जाते है। इसी तरह **ईद, बकरीद, क्रिसमस** आदि त्योहार का भी महत्व है।

कहां तक कहे, सभी प्रकार के त्योहार हमें परस्पर एकता, एकरसता , एकरूपता और एकात्मकता का पाठ पढ़ाते है। यही कारण है कि सभी धर्मों के लोग त्योहार और पर्वों को अपना त्योहार, पर्व मान करके उसमें भाग लेते है और ह्रदय से लगाते हैं। अतएव हमारे देश के त्योहारों का महत्व **धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक** दृष्टि से बहुत अधिक है। **राष्ट्रीय महत्व की दृष्टि से 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस, 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस, 2 अक्टूबर को गांधी जयंती, 14 नवम्बर को बाल दिवस आदि मनाया जाता** है। संक्षेप में हम कह सकते है कि हमारे देश के त्योहार विशुद्ध प्रेम, भेदभाव और सहानुभूति को प्रदर्शित करते है।

****



भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का संघ सरकार (वाणिज्यिक) 31 मार्च 2019 को समाप्त वर्ष के लिए अनुपालन लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां- 2020 की रिपोर्ट संख्या - 18

दिल्ली, बैंगलोर, हैदराबाद, त्रिवेंद्रम और मैंगलोर में एयर इंडिया लिमिटेड (एआईएल) की संयुक्त उद्यम कंपनी एयर इंडिया एसएटीएस एयरपोर्ट सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड (एआईएसएटीएस), एआईएल की सहायक कंपनी एयरलाइन एलाइड सर्विसेज लिमिटेड (एएएसएल) सहित अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू एयरलाइनों को ग्राउंड हैंडलिंग (जीएच) सेवाएं प्रदान कर रही है। इस तथ्य के बावजूद कि संशोधित कम दर, अध्यक्ष एआईएसएटीएस द्वारा अनुमोदित थी, एआईएल ने एएएसएल द्वारा प्राप्त सेवाओं के लिए ₹44.88 करोड़ के जीएच प्रभारों की विभेदक राशि वहन की। एआईएल द्वारा अवशोषित विभेदक प्रभारों को कंपनी अधिनियम, 2013 की धारा 177 (4) के तहत आवश्यक एआईएल की लेखापरीक्षा समिति की मंजूरी नहीं है

(पैरा 2.3)

ऑयल एंड नेचुरल गैस कॉर्पोरेशन लिमिटेड (ओएनजीसी) ने अक्टूबर 2003 में इनफॉरमेशन कनसालिडेशन फॉर ऐफिशिऐंसी (आईसीई) नाम की एक परियोजना शुरू की, जो वास्तविक समय के आधार पर उपलब्ध एकीकृत सूचना के लिए व्यवसाय प्रक्रियाओं के अनुकूलन और मानकीकरण के उद्देश्य से एक सामान्य उद्यम संसाधन योजना (ईआरपी) प्रणाली के तहत अपनी व्यावसायिक प्रक्रियाओं को फिर से शुरू करने और स्रोत बिंदु पर डेटा कैप्चर करके दक्षता और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए गतिविधियों के दोहराव को समाप्त करने के लिए है।

लेखापरीक्षा में पाया गया कि मास्टर रिकॉर्ड में परिसंपत्ति के स्थान और अभिरक्षक पर डेटा ठीक से नहीं डाला गया था और 571 पूर्व कर्मचारियों को ₹87.43 करोड़ मूल्य की परिसंपत्ति के अभिरक्षक के रूप में सिस्टम में निरूपित किया जाता रहा। वेंडर मास्टर में गलत बैंक कुंजी और डुप्लिकेट वेंडर रिकॉर्डों की पहचान की गई थी। इसके अलावा, लेखापरीक्षा ने उल्लेख किया कि एक बार के वेंडर के रूप में वर्गीकृत वेंडरों के लिए बार-बार भुगतान किए गए और भुगतान ब्लॉक कुंजी (1096 दिनों तक) में बिना किसी कारण के अतिदेय भुगतान जारी रहा। लेखापरीक्षा ने यह भी देखा कि ड्रिलिंग लागत के आवंटन को अपनाने के लिए कंपनी में समान व्यवहार का पालन नहीं किया जाता है।

(पैरा 9.2)

भारत के नियंत्रक महालेखापरीक्षक का संघ सरकार (वाणिज्यिक) 31 मार्च 2019 को समाप्त वर्ष के लिए अनुपालन लेखापरीक्षा अभ्युक्तियां- 2020 की रिपोर्ट संख्या - 18

ओएनजीसी ने कच्चे तेल की बिक्री के लिए आईओसीएल और बीपीसीएल के साथ एक समझौता ज्ञापन किया (अप्रैल 2002)। विक्रय मूल्य स्लैब दरों पर छूट के अधीन था यदि कच्चे तेल में बेसिक सेडिमेंट और पानी (बीएसएण्डडब्ल्यू) का तत्व मात्रा से 0.2 *प्रतिशत* अधिक था। ओएनजीसी के असम क्षेत्रों से उत्पादित तेल में उच्च बीएसएंडडब्ल्यू घटक अधिक होती है, जिसके कारण रिफाइनरियों को आपूर्ति करने से पहले बीएसएंडडब्ल्यू की मात्रा के स्तर को 0.2 प्रतिशत से नीचे लाने के लिए कच्चे तेल के प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है। लेखापरीक्षा में पाया गया कि असम नवीकरण योजना की परिकल्पना काफी पहले दिसंबर 2005 में ₹2,465.15 करोड़ की अनुमानित लागत के साथ की गई थी। परियोजना के प्रमुख डिलिवरेबल्स में से एक

बीएसएंडडब्ल्यू स्तर को 0.2 प्रतिशत से नीचे नियंत्रित करना था। हालांकि यह परियोजना मार्च 2013 में पूरी होने वाली थी, किंतु अभी भी कार्य जारी है। अप्रैल 2014 से अक्टूबर 2019 के दौरान कच्चे तेल में बीएसएंडडब्ल्यू 0.164 से 0.417 प्रतिशत थे, जिसके परिणामस्वरूप ओएनजीसी को ₹27.06 करोड़ की राशि की मूल्य छूट/ राजस्व की हानि हुई थी।

(पैरा 9.3)

ऑयल मार्केटिंग कंपनियों (ओएमसी) के पेट्रोलियम उत्पादों की बिक्री का प्रमुख हिस्सा बनने वाले पेट्रोल (एमएस) और डीजल (एचएसडी) की कीमतें क्रमशः जून 2010 और अक्टूबर 2014 में जीओआई द्वारा अविनियमित की गई थीं। ओएमसी ने एमएस और एचएसडी के खुदरा बिक्री कीमत में दैनिक परिवर्तन को 16 जून 2017 से प्रभावी किया, जो की तब तक पखवाड़े में संशोधित किया जा रहा था। लेखापरीक्षा ने दैनिक मूल्य निर्धारण के क्रियान्वयन की समीक्षा करने के लिए 188 रिटेल आउटलेट्स (आरओ) की नमूना जाँच की और आरओ के स्वचालन और ओएमसी में निरंतर कनेक्टिविटी के प्रावधान के संदर्भ में दैनिक मूल्य संशोधन के क्रियान्वयन के समय ओएमसी की तैयारी की अपर्याप्तता को देखा। कुछ स्वचालित आरओ में, डीलरों को दैनिक कीमतों को मैन्युअल रूप से बदलते पाया गया। डीलरों ने कीमतों को बदलने में भी शीघ्रता नहीं की जिससे ग्राहकों से अधिप्रभार/ न्युन प्रभार से कीमतें वसूल की गई। लेखापरीक्षा ने मूल्य परिवर्तनों की अपर्याप्त निगरानी, ओएमसी के फील्ड अधिकारियों द्वारा आरओ के निरीक्षण मे कमी और फील्ड अधिकारियों द्वारा अपनी निरीक्षण रिपोर्ट में अपर्याप्त रिपोर्टिंग को देखा।

(पैरा 9.4)

कार्यालय में वन आईएएडी वन सिस्टम(ओआईओएस) का कार्यान्वयन

हमारे कार्यालय में ओआईओएस का व्यापक स्तर पर कार्यान्वयन अगस्त-2021 से प्रारंभ किया गया है। क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान के ओआईओएस प्रशिक्षण दल द्वारा ओआईओएस के संबंध में कई प्रशिक्षण सत्रों का आयोजन करवाया गया जिसमें ओआईओएस के सभी पहलूओं के विषय में कार्यालय संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों को जानकारी प्रदान किया गया। प्रशिक्षण के उपरांत कार्यालय के ओआईओएस से संबंधित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से लेखापरीक्षा दलों द्वारा ओआईओएस प्रणाली में लेखापरीक्षा कार्यक्रमों को निष्पादित करना प्रारंभ किया गया है।

चूंकि कार्यप्रणाली नवीन है, इसलिए इसके कार्यान्वयन के दौरान कुछ समस्याओं का सामना भी करना पड़ा। जब भी किसी प्रकार की समस्या आई तो क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान के संबंधित अधिकारी द्वारा सदैव सकारात्मक उत्तर प्राप्त हुआ है। कभी-कभी जब जटिल समस्याएं आई तो समस्याओं के समाधान हेतु ओआईओएस के डेवलपर की सहायता प्राप्त की गई तथा उनके सहयोग से समस्या का निदान किया गया।

क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान के ओआईओएस दल के निरंतर सहयोग तथा कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सकारात्मक प्रयासों के फलस्वरुप कार्यालय में लगभग सभी लेखापरीक्षा योजनाएं, सौपें गए कार्य तथा कार्यक्रम को ओआईओएस में किए जा रहे हैं तथा कार्यक्रम से संबंधित लेखापरीक्षा टिप्पणियाँ और प्रतिवेदन भी इस प्रणाली में बनाए जा रहे हैं।

भविष्य में सभी कार्यक्रम ओआईओएस प्रणाली में ही बनाए जाने तथा ओआईओएस के और बेहतर प्रयोग हेतु कार्यालय द्वारा यथासंभव प्रयास किए जा रहे हैं। हमें विश्वास है कि कार्यालय के सकारात्मक कार्यों के परिणामस्वरुप शीघ्र ही कार्यालय में ओआईओएस प्रणाली का और बेहतर प्रयोग सुनिश्चित किया जाएगा।

(आईटी अनुभाग के सौजन्य से)

राजभाषा संबंधी जानकारी

राजभाषा अधिनियम 1963 (यथा संशोधित 1967) की धारा 3(3) के अनुसार हिंदी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में जारी किए जाने वाले दस्तावेज --

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा (3)3 के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागज़ात

1- सामान्य आदेश (General Orders)

2 -संकल्प (Resolution)

3- परिपत्र (Circulars)

4-नियम (Rules)

5- प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन (Administrative or other reports)

6- प्रेस विज्ञप्तियां (Press Release/Communiques)

7- संविदाएं (Contracts)

8- करार (Agreements)

9- अनुज्ञप्तियां (Licenses)

10- निविदा प्रारुप (Tender Forms)

11- अनुज्ञा पत्र (Permits)

12- निविदा सूचनाएं (Tender Notices)

13- अधिसूचनाएं (Notifications)

14- संसद के समक्ष् रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज़ पत्र (Reports and documents to be laid before the Parliament)

राजभाषा (संघ के शासकीय प्रयोजनों के लिए प्रयोग) नियम, 1976

(यथा संशोधित, 1987, 2007 तथा 2011)

इनका विस्तार, तमिलनाडु राज्य के सिवाय सम्पूर्ण भारत पर है।

'क्षेत्र क' से बिहार, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखंड़, उत्तराखंड राजस्थान और उत्तर प्रदेश राज्य तथा अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

'क्षेत्र ख' से गुजरात, महाराष्ट्र और पंजाब राज्य तथा चंडीगढ़, दमण और दीव तथा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत हैं;

'क्षेत्र ग' से उपर्युक्त राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से भिन्न राज्य तथा संघ राज्य क्षेत्र अभिप्रेत है;

नियम-5 : हिन्दी में प्राप्त पत्रादि के उत्तर--

हिन्दी में पत्रादि के उत्तर केन्द्रीय सरकार के कार्यालय से हिन्दी में दिए जाएंगे ।

नियम-6 हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग-

अधिनियम की धारा 3 की उपधारा (3) में निर्दिष्ट सभी दस्तावेजों के लिए हिन्दी और अंग्रेजी दोनों का प्रयोग किया जाएगा और ऐसे दस्तावेजों पर हस्ताक्षर करने वाले व्यक्तियों का यह उत्तरदायित्व होगा कि वे यह सुनिश्चित कर लें कि ऐसी दस्तावेजें हिन्दी और अंग्रेजी दोनों ही में तैयार की जाती हैं, निष्पादित की जाती हैं और जारी की जाती हैं।

नियम 9 : हिन्दी में प्रवीणता-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर कोई परीक्षा हिन्दी के माध्यम से उत्तीर्ण कर ली है या स्नातक परीक्षा में अथवा स्नातक परीक्षा की समतुल्य या उससे उच्चतर किसी अन्य परीक्षा में हिन्दी को एक वैकल्पिक विषय के रूप में लिया हो; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसे हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त है तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी में प्रवीणता प्राप्त कर ली है ।

नियम 10 : हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान-

यदि किसी कर्मचारी ने-

मैट्रिक परीक्षा या उसकी समतुल्य या उससे उच्चतर परीक्षा हिन्दी विषय के साथ उत्तीर्ण कर ली है; या केन्द्रीय सरकार की हिन्दी परीक्षा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्राज्ञ परीक्षा या यदि उस सरकार द्वारा किसी विशिष्ट प्रवर्ग के पदों के सम्बन्ध में उस योजना के अन्तर्गत कोई निम्नतर परीक्षा विनिर्दिष्ट है, वह परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है या केन्द्रीय सरकार द्वारा उस निमित्त विनिर्दिष्ट कोई अन्य परीक्षा उत्तीर्ण कर ली है; या

यदि वह इन नियमों से उपाबद्ध प्ररूप में यह घोषणा करता है कि उसने ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है; तो उसके बारे में यह समझा जाएगा कि उसने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

यदि केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में कार्य करने वाले कर्मचारियों में से अस्सी प्रतिशत ने हिन्दी का ऐसा ज्ञान प्राप्त कर लिया है तो उस कार्यालय के कर्मचारियों के बारे में सामान्यतया यह समझा जाएगा कि उन्होंने हिन्दी का कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त कर लिया है।

नियम 11 : मैनुअल, संहिताएं, प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, लेखन सामग्री आदि-

=> केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों से संबंधित सभी मैनुअल, संहिताएं और प्रक्रिया संबंधी अन्य साहित्य, हिन्दी और अंग्रेजी में द्विभाषिक रूप में यथास्थिति, मुद्रित या साइक्लोस्टाइल किया जाएगा और प्रकाशित किया जाएगा।

=> केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग किए जाने वाले रजिस्टरों के प्ररूप और शीर्षक हिन्दी और अंग्रेजी में होंगे।

=> केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय में प्रयोग के लिए सभी नामपट्ट, सूचना पट्ट, पत्रशीर्ष और लिफाफों पर उत्कीर्ण लेख तथा लेखन सामग्री की अन्य मदें हिन्दी और अंग्रेजी में लिखी जाएंगी, मुद्रित या उत्कीर्ण होंगी;

परन्तु यदि केन्द्रीय सरकार ऐसा करना आवश्यक समझती है तो वह, साधारण या विशेष आदेश द्वारा, केन्द्रीय सरकार के किसी कार्यालय को इस नियम के सभी या किन्हीं उपबन्धों से छूट दे सकती है।

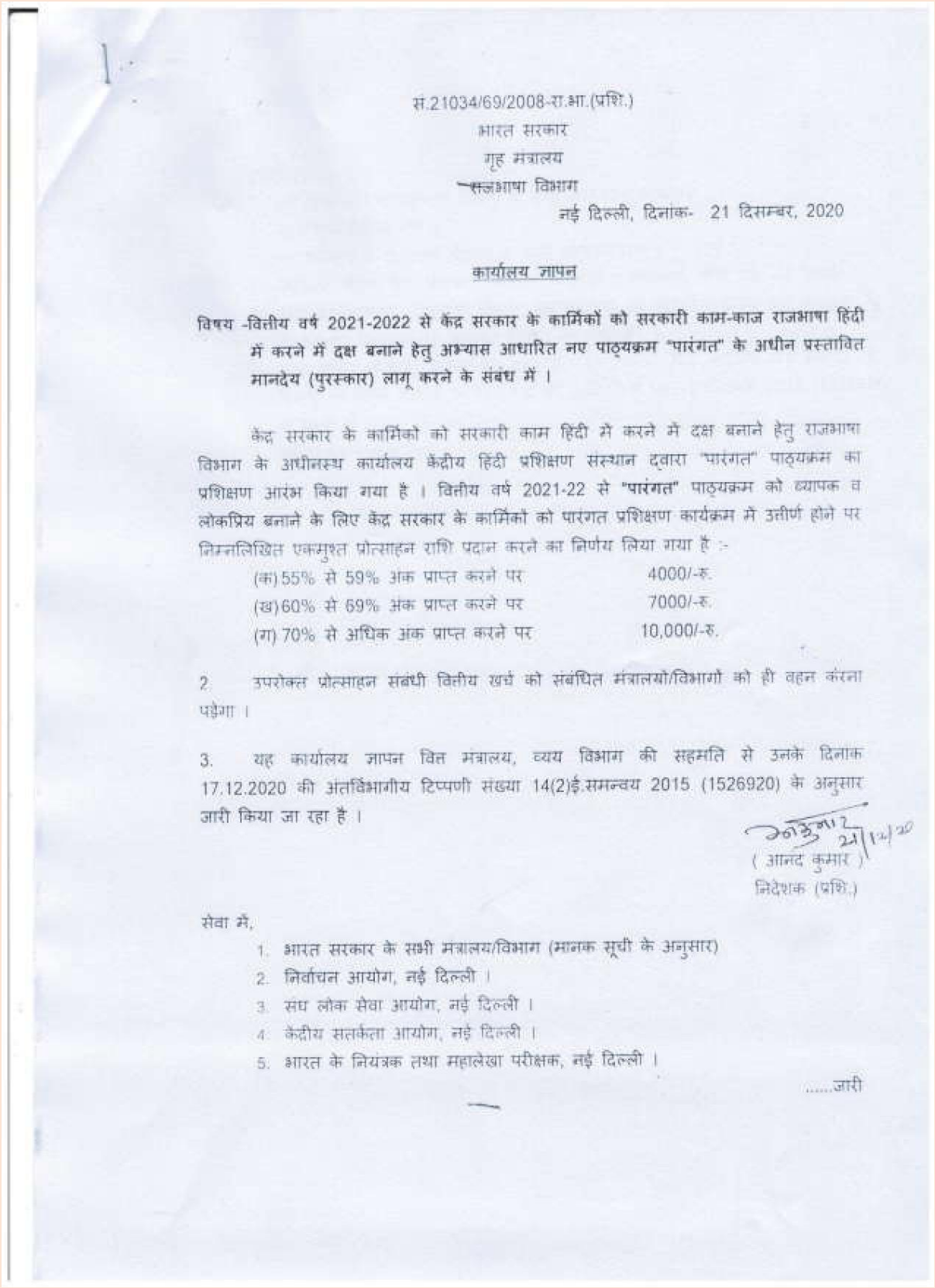
नियम 12 : अनुपालन का उत्तरदायित्व-

केन्द्रीय सरकार के प्रत्येक कार्यालय के प्रशासनिक प्रधान का यह उत्तरदायित्व होगा कि वह--

यह सुनिश्चित करे कि अधिनियम और इन नियमों के उपबंधों और उपनियम (2) के अधीन जारी किए गए निदेशों का समुचित रूप से अनुपालन हो रहा है और इस प्रयोजन के लिए उपयुक्त और प्रभावकारी जांच के लिए उपाय करे।

****

सरकार के कार्मिकों के लिए राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रोत्साहन योजनाएं



स.21034/69/2008-रा.भा.(प्रशि.)
भारत सरकार
गृह मंत्रालय
राजभाषा विभाग
नई दिल्ली, दिनांक- 21 दिसम्बर, 2020

कार्यालय ज्ञापन

विषय -वित्तीय वर्ष 2021-2022 से केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी काम-काज राजभाषा हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु अभ्यास आधारित नए पाठ्यक्रम "पारंगत" के अधीन प्रस्तावित मानदेय (पुरस्कार) लागू करने के संबंध में ।

केंद्र सरकार के कार्मिकों को सरकारी काम हिंदी में करने में दक्ष बनाने हेतु राजभाषा विभाग के अधीनस्थ कार्यालय केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान द्वारा "पारंगत" पाठ्यक्रम का प्रशिक्षण आरंभ किया गया है । वित्तीय वर्ष 2021-22 से **"पारंगत"** पाठ्यक्रम को व्यापक व लोकप्रिय बनाने के लिए केंद्र सरकार के कार्मिकों को पारंगत प्रशिक्षण कार्यक्रम में उत्तीर्ण होने पर निम्नलिखित एकमुश्त प्रोत्साहन राशि प्रदान करने का निर्णय लिया गया है :-

(क) 55% से 59% अंक प्राप्त करने पर	4000/-रु.
(ख) 60% से 69% अंक प्राप्त करने पर	7000/-रु.
(ग) 70% से अधिक अंक प्राप्त करने पर	10,000/-रु.

2. उपरोक्त प्रोत्साहन संबंधी वित्तीय खर्च को संबंधित मंत्रालयों/विभागों को ही वहन करना पड़ेगा ।

3. यह कार्यालय ज्ञापन वित्त मंत्रालय, व्यय विभाग की सहमति से उनके दिनांक 17.12.2020 की अंतर्विभागीय टिप्पणी संख्या 14(2)/E.समन्वय 2015 (1526920) के अनुसार जारी किया जा रहा है ।

21/12/20
(आनंद कुमार)
निदेशक (प्रशि.)

सेवा में,

1. भारत सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग (मानक सूची के अनुसार)
2. निर्वाचन आयोग, नई दिल्ली ।
3. संघ लोक सेवा आयोग, नई दिल्ली ।
4. केंद्रीय सतर्कता आयोग, नई दिल्ली ।
5. भारत के नियंत्रक तथा महालेखा परीक्षक, नई दिल्ली ।

.....जारी

सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने के लिए प्रोत्साहन योजना

सरकारी काम मूल रूप से हिंदी में करने के लिए पुरस्कार राशि निम्न प्रकार है-

केंद्र सरकार के प्रत्येक मत्रालय/विभाग/संम्बंध कार्यालय के लिए स्वतंत्र रूप से:

पहला पुरस्कार (2 पुरस्कार) : प्रत्येक 5000/-रुपये

दूसरा पुरस्कार (3 पुरस्कार) : प्रत्येक 3000/-रुपये

तीसरा पुरस्कार (5 पुरस्कार) : प्रत्येक 2000/-रुपये

(का.ज्ञा.सं. 12013/01/2011-रा.भा.(नीति) दिनांक 14 सितंबर, 2016)

योजना के लिए मुख्य मार्गदर्शी निम्नानुसार हैं:-

केन्द्रीय सरकार के सभी मंत्रालय/विभाग/संबंध और अधीनस्थ कार्यालय अपने अधिकारीयों/कर्मचारियों के लिए स्वतंत्र रूप से इस योजना को लागू कर सकते हैं|

सभी श्रेणियों के वे अधिकारी/कर्मचारी इस योजना में भाग ले सकते हैं जो सरकारी काम पूर्णतः या कुछ हद तक मूल रूप से हिंदी में करते हैं|

केवल वही अधिकारी/कर्मचारी पुरस्कार के पात्र होंगे जो 'क' तथा 'ख' क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 20 हजार शब्द तथा 'ग' क्षेत्र में वर्ष में कम से कम 10 हजार शब्द हिंदी में लिखें| इसमें मूल टिप्पण व प्रारूप के आलावा हिंदी में किये गए अन्य कार्य जिनका सत्यापन किया जा सके, जैसे रजिस्टर में इन्दराज, सूची तैयार करना, लेखा का काम आदि भी शामिल किये जायेगें|

आशुलिपि/टाइपिस्ट, जो सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने संबंधी किसी अन्य योजना के अतर्गत आते हैं इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे|

हिंदी अधिकारी और हिंदी अनुवादक सामान्यतः अपना काम हिंदी में करते हैं, वे इस योजना में भाग लेने के पात्र नहीं होंगे|

(क) मूल्याकंन करने के लिए कुल 100 अंक रखे जायेंगे| इनमें से 70 अंक हिंदी में किये गए काम की मात्रा के लिए रखे जायेंगे और 30 प्रतिशत अंक विचारों की स्पष्टता के लिए होंगे| (ख) जिन प्रतियोगियों की मातृभाषा तमिल, तेलगू, कन्नड़, मलयालम, बंगाली, उड़िया या असमिया हो उन्हें 20 प्रतिशत अंको का लाभ दिया जायेगा| ऐसे कर्मचारी को दिए जाने वाले वास्तविक अंकों के लाभ का निर्धारण मूल्यांकन समिति द्वारा किया जायेगा| ऐसा करते समय समिति उन अधिकारियों/कर्मचारियों के काम के स्तर को भी ध्यान में रखेगी जो अन्यथा उससे क्रम में ऊपर हैं|

कार्यालय में आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह



हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान दीप प्रज्वलित करते हुए महानिदेशक महोदय





हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण



हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार वितरण



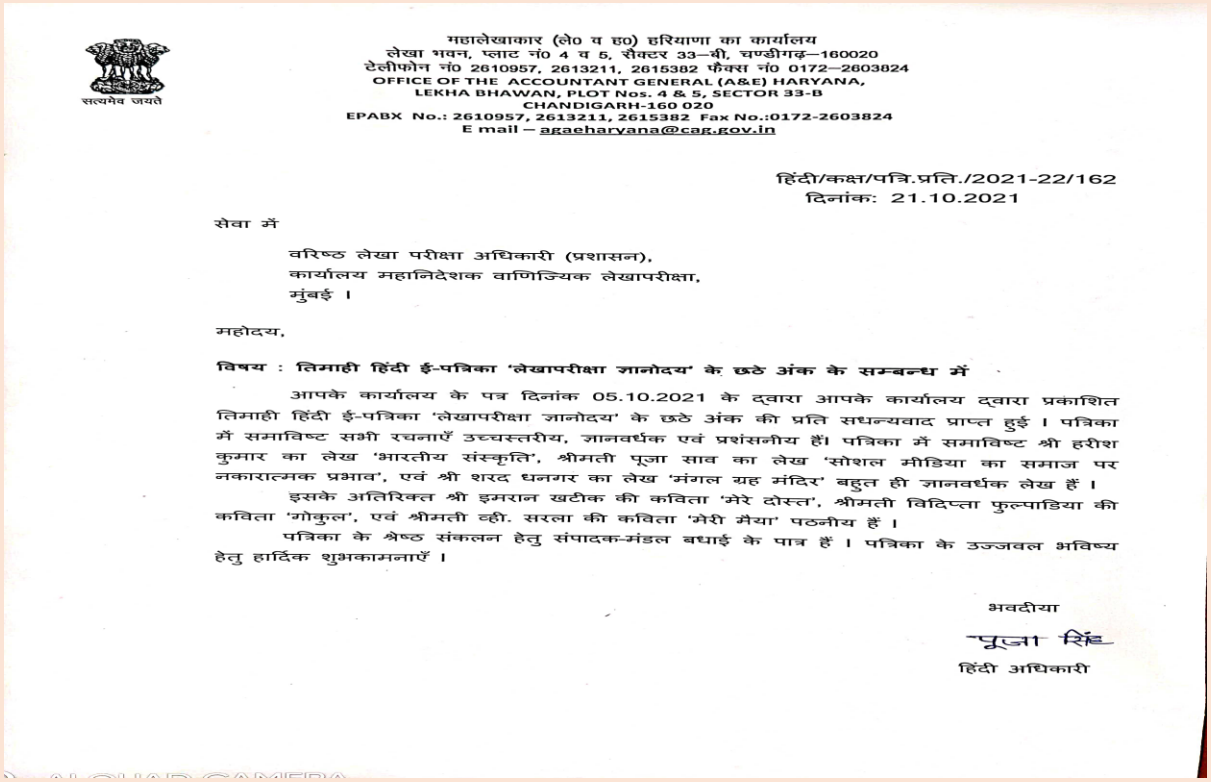
वर्ष 2020-21 के दौरान राजभाषा हिंदी में कार्य करने हेतु अनुभाग/लेखापरीक्षा दल को कार्यालयी राजभाषा शील्ड

आपके पत्र

कार्यालय महालेखाकार-लेखापरीक्षा)II), तमिलनाडु एवं पुदुचेरी

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित त्रैमासिक हिंदी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" का छठवां अंक ई पत्रिका के रूप में प्राप्त हुआ , सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका के इस अंक में संकलित सभी लेख और रचनाएँ सरल, सरस एवं पठनीय हैं। सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, ज्ञानवर्धक एवं संग्रहणीय हैं। पत्रिका में समाविष्ठ सभी रचनाएं राजभाषा को बढ़ावा देने हेतु उपयोगी है। श्रेष्ठ संपादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई । पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिंदी के प्रगतिशील उत्थान हेतु आपके कार्यालय के समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा किया गया प्रयास अति सराहनीय है। पत्रिका के निरंतर उज्जवल भविष्य के लिए और उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

वीचित्रा .
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय महालेखाकार-लेखापरीक्षा)II),
तमिलनाडु एवं पुदुचेरी



सत्यमेव जयते

महालेखाकार (ले0 प ह0) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लाट नं0 4 प 5, सैक्टर 33—बी, चण्डीगढ़—160020
टैलीफोन नं0 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं0 0172—2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No.: 2610957, 2613211, 2615382 Fax No.:0172-2603824
E mail – agaeharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्ष/पत्रि.प्रति./2021-22/162
दिनांक: 21.10.2021

सेवा में

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई ।

महोदय,

विषय : तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठे अंक के सम्बन्ध में

आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 05.10.2021 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठे अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई । पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, ज्ञानवर्धक एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री हरीश कुमार का लेख 'भारतीय संस्कृति', श्रीमती पूजा साव का लेख 'सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव', एवं श्री शरद धनगर का लेख 'मंगल ग्रह मंदिर' बहुत ही ज्ञानवर्धक लेख हैं ।

इसके अतिरिक्त श्री इमरान खटीक की कविता 'मेरे दोस्त', श्रीमती विदिप्ता फुल्पाडिया की कविता 'गोकुल', एवं श्रीमती व्ही. सरला की कविता 'मेरी मैया' पठनीय हैं ।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक-मंडल बधाई के पात्र हैं । पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ।

भवदीया
पूजा सिंह
हिंदी अधिकारी

भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा–I)
पश्चिम बंगाल
2, गवर्मेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स,
कोलकाता – 700 001

सत्यमेव जयते

INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
OFFICE OF THE PRINCIPAL
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT-I),
WEST BENGAL
2, GOVT. PLACE (WEST), TREASURY BUILDINGS,
KOLKATA-700 001
Ph. (033) 2213-3151/52, Fax (033) 2213-3174
e-mail : agauwestbengal1@cag.gov.in

संख्या: हिन्दी कक्ष/हिन्दी पत्रिका/पावती/ 143
दिनांक: 11.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा (पू.), मुंबई - 400 051

विषय : राजभाषा हिन्दी तिमाही ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठे अंक की पावती।

महोदय/महोदया,

पत्र क्रमांकः डीजीसीए/प्रशा./हिंदी पत्रिका/647, दिनांक:05.10.2021 के तहत् आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी तिमाही ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठे अंक की ई-प्रति ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई। सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज - सज्जा सुन्दर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं उच्च कोटि की है। विशेष रूप से राजभाषा संबंधी जानकारी **'सरकार के कार्मिकों के लिए राजभाषा हिंदी से संबंधित प्रोत्साहन योजनाएं'** अत्यंत ज्ञानवर्धक है। । एक अनुरोध है कि हमारे कार्यालय द्वारा भेजे गये पावती को पत्रिका के अगले अंक के **"आपके पत्र"** में जरूर शामिल करें।

पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीय,
हस्ता/-
वरि० लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी कक्ष)

File No..../-11005/02/2021-22/

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-II) राजस्थान, जयपुर

क्रमांकः रा.भा.अ./एच-11005/02/2021-22/ दिनांक 14/10/2021

वरि. लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई - 400 051

विषयः- तिमाही हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छटवें अंक की प्रतिक्रिया प्रेषण के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित तिमाही हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छटवें अंक की प्राप्ति हुई, तदर्थ बहुत-बहुत आभार। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक, उत्कृष्ट तथा संग्रहणीय हैं। इस अंक में सभी अतिथि साहित्यकारों ने लेखनी विधा को जीवंत तथा पठनीय बनाने का सराहनीय प्रयास किया है, जिसमें विश्व में हिन्दी भाषा की महत्ता का यशोगान किया है।

पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएं।

Arun Kumar Sharma
Sr.audit Officer

राजभाषा अनुभाग

कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम, उत्तर प्रदेश,
20, सरोजिनी नायडू मार्ग, प्रयागराज-211001

प.सं. हि.अ./पत्रिका/57023 **दिनांक: 20.10.2021**

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/ प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा (पू.), मुंबई - 400051

विषयः- तिमाही हिन्दी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें संस्करण की प्राप्ति एवं प्रतिक्रिया ।

महोदय,

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें संस्करण की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद । पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है । संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं । विशेषकर श्रीमती स्वप्ना फुलपाडिया **(मेरा अनुभव)**, सुश्री वी. सरला **(मेरी मैया)**, श्री आकाश सिंह हाडा **(ट्रेड वार एवं डब्ल्यू.टी.ओ.)**, एवं सुश्री पूजा साव **(सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव)** आदि की रचनाएं काफी रोचक एवं उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मण्डल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं । पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है ।

भवदीय,

20/10/21

हिन्दी अधिकारी

भारत सरकार/Government of India
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हक), ओड़िशा, भुवनेश्वर-751001
O/o the Accountant General (A&E), Odisha, Bhubaneswar-751001

सं-हि.प्र/प.प्र./2021/85 दिनांक : 25.11.2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा [illegible],
मुंबई, सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स,
बांद्रा (पू), मुंबई-400051

विषय: तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 6वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित होने वाली तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 6वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका की साज-सज्जा अत्यंत ही आकर्षक है। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएँ उच्च कोटि की एवं सराहनीय है। सुश्री वी. सरला की रचना "धरती के मानव", श्री आनंद कुमार सिंह की रचना "मनोरंजन का स्वरूप", श्री संजय एल ठाकुर की रचना "नारी एक शक्ति" एवं श्री हरीश कुमार की रचना "भारतीय संस्कृति" विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए संपादक मंडल को पत्रिका के सफल संपादन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

भवदीय,

हिंदी अधिकारी/प्रभारी

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
The Director General of Commercial Audit
आवक क्र. No. 1340
दि. Dt. 30/11/21

कार्यालय
महालेखाकार (ले. व ह.)
हिमाचल प्रदेश, शिमला–171 003
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (A&E)
HIMCHAL PRADESH, SHIMLA-171 003

(5)

सं0 हि0क0 / ले0 व ह0 / पत्रिका समीक्षा / 2021–22 /137 दिनांक:–08/11/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई–400051

विषय: तिमाही हिंदी ई–पत्रिका ' लेखापरीक्षा ज्ञानोदय ' के छठवें सस्करण का प्रेषण ।

महोदय,

आपके कार्यालय की ई–पत्रिका ' लेखापरीक्षा ज्ञानोदय ' के छठवें सस्करण की प्रति प्राप्त हुई है जिसमें प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक है। हिंदी भाषा की सृजनशीलता के उत्थान हेतु आपका यह प्रयास सराहनीय है जिसके लिये आपका राजभाषा परिवार बधाई का पात्र है।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा अधिकारी
(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
आवक क्र. No. 1265
दि. Dt. 17-11-21

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), उत्तराखण्ड
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT), UTTARAKHAND

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

पत्रांक:हिन्दी/सामान्य-विविध/25/2018-2019/179
दिनांक: 28 .10.2021

सेवा में,

2403

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय मानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल, बांद्रा (पू),
मुंबई, फैक्स - 022-26573813
टेलीफोन - 022-26573813

विषय: **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक की पावती के संबंध में।**

महोदय/महोदया,

आपके द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद,

पत्रिका का सम्पादन सराहनीय है। पत्रिका में सभी लेख एवं रचनाएं प्रशंसनीय हैं। कार्यालय के प्राय: सभी वर्ग के कार्मिकों ने अपनी मौलिकता से पत्रिका को सुजज्जित किया है। पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
आवक क्र. No. 1239
दि. Dt. 15/11/2021

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार, लेखापरीक्षा - II
पश्चिम बंगाल
Office of the Pr. Accountant General, Audit -II
West Bengal

संख्या :- हिन्दी कक्ष/पत्रिका पावती/39 दिनांकः- / /2021
28 OCT 2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा
सी-25, ऑडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा (पू),
मुंबई- 400 051

विषयः तिमाही हिंदी ई- पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें संस्करण के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित तिमाही हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें संस्करण की प्राप्ति हुई है। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं। पत्रिका का आवरण, पृष्ठ एवं पत्रिका में प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक और मनमोहक है। साथ-ही पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत आकर्षणीय है। कविताएँ एवं लेख भी भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं।

आशा करता हूँ कि पत्रिका की गुणवत्ता एवं रचनात्मकता में उत्तरोत्तर प्रगति जारी रहेगी। पत्रिका के उज्जवल भविष्य तथा आगामी अंकों के लिए बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भवदीय,

26/10/21
व.लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्ष

सत्यमेव जयते

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा)
हरियाणा,
प्लॉट नं. 5, सैक्टर 33-बी,
दक्षिण मार्ग, चण्डीगढ़-160 020
OFFICE OF THE
Pr. ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)
HARYANA
PLOT NO.5, SECTOR 33-B,
DAKSHIN MARG, CHANDIGARH-160 020.
संख्याः हिंदी कक्ष/हिंदी पत्रिका/प्रतिक्रिया/2021-22/(9)
दिनांकः 21.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई,
सी-25, आडिट भवन, 8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्पलेक्स,
(बांद्रा पूर्व) मुंबई-400 051

विषयः **तिमाही हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठवें संस्करण का प्रेषण।**

महोदय,

आपके पत्र सं: डीजीसीए/प्रशा./हिंदी पत्रिका दिनांक 05.10.2021 को ई-मेल द्वारा प्रेषित हिंदी ई-पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठवें अंक के ई-संस्करण की प्रति भेजने हेतु धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं उच्च कोटि की हैं। 'मेरा अनुभव', 'धरती के मानव', 'ट्रेड वॉर एवं डब्ल्यू.टी.ओ.', 'नारी एक शक्ति', 'सोशल मीडिया का समाज पर नकारात्मक प्रभाव' तथा 'भारतीय संस्कृति' विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

भवदीय,

22/10/21
पर्यवेक्षक
(हिंदी कक्ष)

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा), झारखण्ड, राँची

पत्रांक- हिन्दी प्रकोष्ठ/ले.प./2021-22/328. दिनांक- 12.10.2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
पिन - 400 051

विषय- हिन्दी गृह पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 6वें अंक की ई-प्रति की प्राप्ति का प्रेषण।

महोदय,

आपके कार्यालय से प्रकाशित हिन्दी गृह पत्रिका **"लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के 6वें अंक** की ई-प्रति की प्राप्ति हुई है। पत्रिका का आवरण पृष्ठ बड़ा ही आकर्षक बना है एवं पत्रिका में निहित "मेरा अनुभव", "धरती के मानव", "नारी एक शक्ति", "भारतीय संस्कृति" आदि रचनाएँ अत्यंत ही उच्चत्तर श्रेणी की हैं।

पत्रिका के सफल सम्पादन एवं प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका के उज्जवल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

13/10/21

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
हिन्दी प्रकोष्ठ

24/c

कार्यालय
महालेखाकार (लेखापरीक्षा)–II, महाराष्ट्र, नागपुर
OFFICE OF THE
ACCOUNTANT GENERAL (AUDIT)-II, MAHARASHTRA, NAGPUR

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या.राजभाषा 8(II)/2021-22/जा.क्र. ..92
दिनांक: 21/10/2021

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी /प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई-400051

विषय : हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठें अंक पर प्रतिक्रिया संबंधी।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद!

पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख एवं कविताएँ रोचक एवं ज्ञानवर्धक है। विशेषकर श्री आनंद कुमार सिंह , कनिष्ठ अनुवादक का लेख 'मनोरंजन का स्वरूप', सुश्री व्ही. सरला, व. लेखापरीक्षा अधिकारी की रचना 'मेरी मैया' तथा श्री शरद धनगर, लेखापरीक्षक का लेख 'मंगलग्रह मंदिर' उल्लेखनीय एवं सराहनीय हैं । पत्रिका का मुख पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है।

पत्रिका के रचनाकारों एवं संपादक मंडल को सफल संपादन तथा प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए हमारे कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
आवक क्र. No. 1151
दि. Dt. 27/10/2021

भवदीया,

27/10/21

(श्रीमती पी.एस.सर्मा)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा (गृह, शिक्षा एवं कौशल विकास)
Office of the Director General of Audit (Home, Education and Skill Development)
इन्द्रप्रस्थ एस्टेट, नई दिल्ली - 110 002
Indraprastha Estate, New Delhi - 110 002

सं.रा.भा.अ/2-9/प्रशंसा पत्र/2021-22/ 130 दिनांक- 20.10.2021

21 OCT 2021

सेवा में

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
सी-25, ऑडिट भवन,8वां तल, बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा (पूर्व), मुंबई-400051

विषय- हिन्दी तिमाही ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक की पावती सह प्रशंसा पत्र ।

महोदय,

कृपया आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 05.10.2021 का संदर्भ लें जिसके द्वारा राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार की दिशा में हिन्दी तिमाही ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय" के छठवें अंक की ई-पत्रिका ई-मेल द्वारा इस कार्यालय को प्राप्त हुई है, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा मुद्रण अति उत्तम है। सुश्री वी. सरला, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी की कविता "मेरी मैया" एवं श्री इमरान खाटीक, वरिष्ठ लेखापरीक्षक की कविता "मेरे दोस्त" अत्यंत ही प्रशंसनीय है।

पत्रिका में प्रकाशित रचनाएं ज्ञानवर्धक, लाभप्रद तथा पूर्ण रूप से पठनीय है। श्रेष्ठ सम्पादन के लिए पत्रिका परिवार को हार्दिक बधाई तथा पत्रिका की अविरल प्रगति तथा विकास हेतु हार्दिक शुभ कामनाएं।

भवदीय,

20/10/21

(मुकेश कुमार यादव)
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)
दूरभाष- 01123454268

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा Office of the Director General of Commercial Audit आवक क्र. No. 1150 दि. Dt. 27/10/2021

दूरभाष/Telephone- 2223251, 2225766, 2224812

सत्यमेव जयते

फैक्स/ Fax 0612-2225977
तार Tele Gram | ACCOUNTS

प्रधान महालेखाकार (ले० एवं ह०) का कार्यालय, बिहार, पटना
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT GENERAL (A&E), BIHAR, PATNA

पत्रांक हिन्दी कक्ष/लेखा/पत्रिका-जवाब/(2021-22)/128
दिनांक 13/10/2021

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी, प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, 8वाँ तल,
बांद्रा-कुर्ला कॉम्प्लेक्स, बांद्रा(पू०),
मुंबई-400051

विषय :- तिमाही हिंदी ई पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठवें अंक के प्रेषण के संबंध में।

महोदय/महोदया,

उपर्युक्त विषयक आपके कार्यालय के ईमेल दिनांक 05/10/2021 के द्वारा हिंदी तिमाही ई पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठवें अंक की ई-प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई।

अंक पठनीय और उत्कृष्ट है। पत्रिका का आवरण एवं साज-सज्जा सुंदर एवं लुभावना है। उसका बाहरी रंग रूप ही नहीं, आंतरिक सौंदर्य भी आकर्षित करता है। पत्रिका में सम्मिलित सभी रचनाएं सराहनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकार बधाई के पात्र हैं। आशा है कि यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ कार्यालय के अधिकारियों/ कर्मचारियों की हिंदी की मौलिक लेखन प्रतिभा को बढ़ावा देने में प्रेरक भूमिका निभाएगी।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका इसी प्रकार निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, ऐसी हमारी शुभकामना है।

भवदीय,

वरीय लेखा अधिकारी,
(हिन्दी कक्ष)

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा Office of the Director General of Commercial Audit आवक क्र. No. 1138 दि. Dt. 26/10/2021

कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) राजस्थान, जयपुर

क्रमांक:-राभाअ/ले.प.-I/एच-11011/के-196/प्रतिक्रिया/2018-22 दिनाँक:-14/10/2021

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
सी-25, ऑडिट भवन, बान्द्रा-कुर्ला संकुल, बान्द्रा (पूर्व),
मुम्बई-400051.

विषय- हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के 6वें अंक की प्रतिक्रिया का प्रेषण।

महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय' के छठवें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाहित सभी रचनाएं रोचक, ज्ञानवर्धक, विषयानुकूल एवं मार्मिक हैं। पत्रिका के भीतर कार्यालयीन गतिविधियों के चित्रों ने इसे ओर भी आकर्षक बना दिया है। पत्रिका के द्वारा हिन्दी के प्रचार-प्रसार के साथ ही कार्यालय कर्मियों को मौलिक लेखन का मंच प्रदान किया गया है।

पत्रिका के उत्तम संयोजन, रचनाओं के उचित चयन एवं सम्पूर्ण सम्पादन हेतु सम्पादकीय परिवार को बधाई।

भवदीय,

Sr.audit Officer
राजभाषा अनुभाग

---

(551)

सत्यमेव जयते

भारतीय लेखा - परीक्षा तथा लेखा विभाग
प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक), पश्चिम बंगाल
Indian Audit And Accounts Department
Principal Accountant General (A & E), West Bengal

स्पीड पोस्ट

संख्या/No. :

दिनांक/Dated मुशा. हिन्दी सेल/पत्रिका/2021-22/ /.../.../2021

15 DEC 2021

सेवा में,

हिन्दी अधिकारी/सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी,
कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा,
मुंबई,सी-25,ऑडिट भवन,8वां तल,
बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स,बांद्रा (पूर्व),
मुंबई - 400051

विषय: त्रैमासिक ई-पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय " के 6वें अंक की पावती एवं अभिमत ।

महोदय,

आपके कार्यालय की पत्रिका "लेखापरीक्षा ज्ञानोदय " के 6वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, एतदर्थ आभार ।

पत्रिका का मुख पृष्ठ एवं पृष्ठों की साज-सज्जा अत्यन्त आकर्षक एवं मनमोहक हैं । यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के विकास की दिशा में किया गया एक सफल प्रयास है। पत्रिका की प्रत्येक रचना रोचक, ज्ञानवर्धक एवं सामाजिक चेतना से परिपूर्ण है। वैसे तो सभी रचनाएँ प्रसंशनीय हैं पर विशेष रूप से श्रीमती स्वप्ना फुल्पाडिया की **"मेरा अनुभव"** तथा श्री हरीश कुमार की **"भारतीय संस्कृति"** बेहद प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक है।

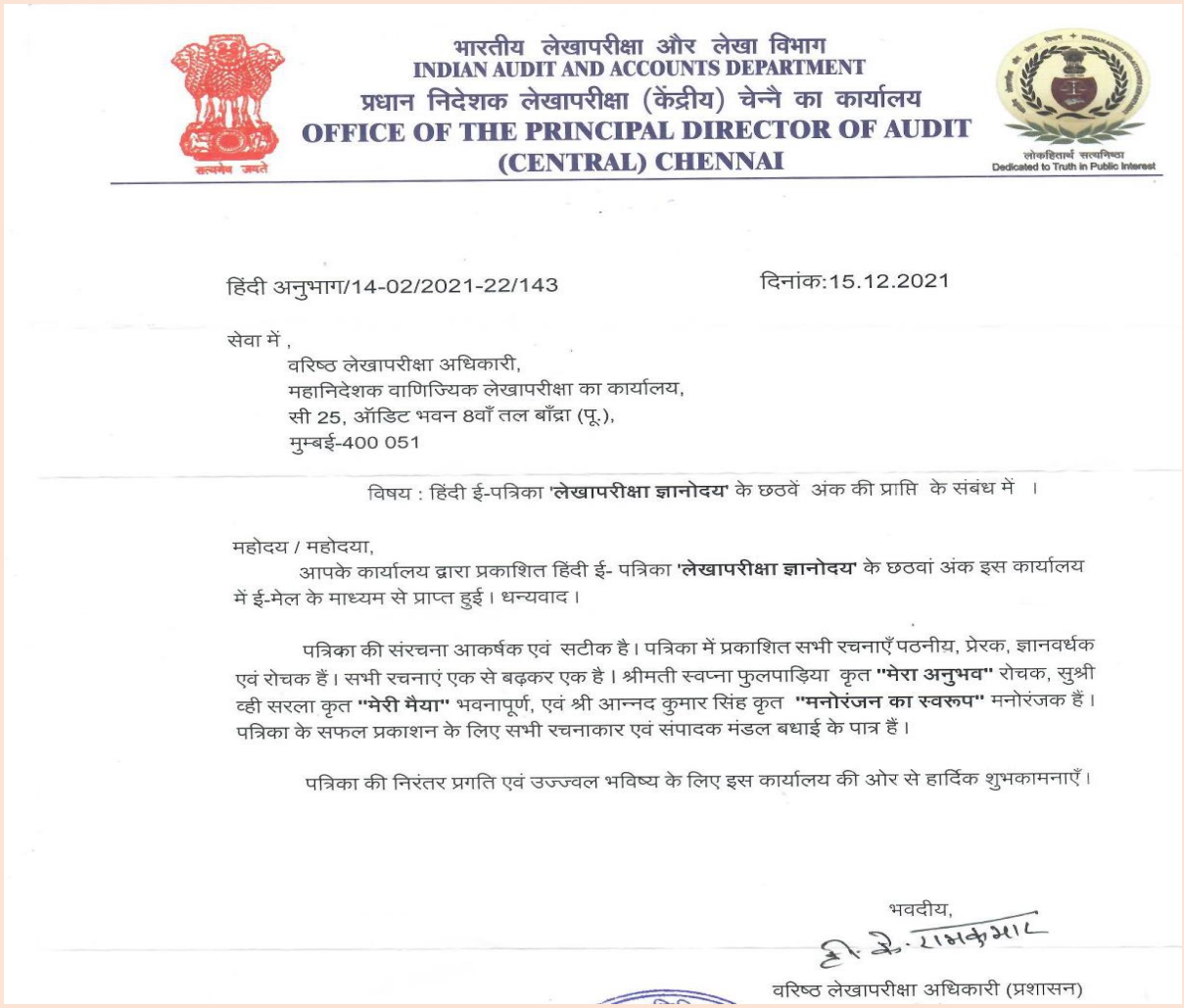
कविताओं में सुश्री वी. सरला की **"मेरी मैया"** एवं श्री इमरान खाटीक की **"मेरे दोस्त"** काफी अर्थपूर्ण एवं रोचक हैं।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना सहित प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों एवं संपादक मण्डल को हार्दिक शुभकामनाएँ ।

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई
Office of the Director General of Commercial Audit, Mumbai
आवक क्र. No. 1443
दि. Dt. 21/12/2021

भवदीय,

(चन्दन कुमार बढ़ई)
हिन्दी अधिकारी/प्रशा.हिन्दी सेल



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग
INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT
प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय
OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT
(CENTRAL) CHENNAI

सत्यमेव जयते

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

हिंदी अनुभाग/14-02/2021-22/143 दिनांक:15.12.2021

सेवा में ,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी,
महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा का कार्यालय,
सी 25, ऑडिट भवन 8वाँ तल बाँद्रा (पू.),
मुम्बई-400 051

विषय : हिंदी ई-पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के छठवें अंक की प्राप्ति के संबंध में ।

महोदय / महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी ई- पत्रिका **'लेखापरीक्षा ज्ञानोदय'** के छठवां अंक इस कार्यालय में ई-मेल के माध्यम से प्राप्त हुई । धन्यवाद ।

पत्रिका की संरचना आकर्षक एवं सटीक है । पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ पठनीय, प्रेरक, ज्ञानवर्धक एवं रोचक हैं । सभी रचनाएं एक से बढ़कर एक है । श्रीमती स्वप्ना फुलपाड़िया कृत **"मेरा अनुभव"** रोचक, सुश्री व्ही सरला कृत **"मेरी मैया"** भवनापूर्ण, एवं श्री आन्नद कुमार सिंह कृत **"मनोरंजन का स्वरूप"** मनोरंजक हैं । पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए सभी रचनाकार एवं संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं ।

पत्रिका की निरंतर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

आप सभी से प्राप्त प्रशंसा एवं शुभकामनाओं के लिए बहुत बहुत आभार। आपके पत्रों के माध्यम से पत्रिका के संबंध में आपकी प्रतिक्रियाएं प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद। आपके प्रतिक्रियाओं से हमारे आगामी अंको हेतु प्रोत्साहन मिलता है तथा हम पत्रिका के प्रकाशन द्वारा राजभाषा के विकास में अपना योगदान देने हेतु प्रेरित होते हैं। हमारे छोटे से प्रयास की सराहना के लिए आप सभी का सादर धन्यवाद तथा हम भविष्य में भी आपके सहयोग की आशा करते हैं। हमे आशा है हम सभी एक साथ मिलकर राजभाषा हिंदी के विकास में अपना योगदान देते रहेंगे।

अतः आप सभी पाठकों से अनुरोध है कि पत्रिका को पढ़ने के पश्चात अपने विचार हमें प्रेषित करें।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/प्रशासन

कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

राजभाषा हिंदी के संबंध में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्य

क्र.सं.	कार्य विवरण	'क' क्षेत्र	'ख' क्षेत्र	'ग' क्षेत्र
1.	हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% 4. क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4.ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% 4. ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्यसंघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
2.	हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
3.	हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
4.	हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
5.	हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
6.	हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
7.	हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
8.	द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
9.	जर्नल और मानक संदर्भ पुस्तकों को छोड़कर पुस्तकालय के कुल अनुदान में से डिजिटल वस्तुओं अर्थात् हिंदी ई-पुस्तक, सीडी/ डीवीडी, पेनड्राइव तथा अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषाओं से हिंदी में अनुवाद पर व्यय की गई राशि सहित हिंदी पुस्तकों की खरीद पर किया गया व्यय।	50%	50%	50%
10.	कंप्यूटर सहित सभी प्रकार के इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों की द्विभाषी रूप में खरीद ।	100%	100%	100%
11.	वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
12.	नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्ड आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

13.	(i) मंत्रालयों/विभागों और कार्यालयों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों (उ.स./निदे./सं.स.) द्वारा अपने मुख्यालय से बाहर स्थित कार्यालयों का निरीक्षण (कार्यालयों का प्रतिशत)	25%(न्यूनतम)	25%(न्यूनतम)
	(ii) मुख्यालय में स्थित अनुभागों का निरीक्षण	25% (न्यूनतम)	25% (न्यूनतम)
	(iii) विदेश में स्थित केंद्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रण के अधीन कार्यालयों/उपक्रमों का संबंधित अधिकारियों तथा राजभाषा विभाग के अधिकारियों द्वारा संयुक्त निरीक्षण		वर्ष में कम से कम एक निरीक्षण
14.	राजभाषा संबंधी बैठकें		
	(क) हिंदी सलाहकार समिति		वर्ष में 2 बैठकें
	(ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक)
	(ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)
15.	कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%	



कार्यालय महानिदेशक वाणिज्यिक लेखापरीक्षा, मुंबई

सी-25, **ऑडिट भवन**, 8**वाँ तल**, **बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स बांद्रा(पूर्व)**, **मुंबई -** 400 051

फैक्स-02226573814 **ई-मेल** pdcamumbai@cag.gov.in